CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लघुरत्नाकर

प्रेमदत्त शर्मा शास्त्री

जहाँगीराबाद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(*All Rights Reserved by the Publisher*)

PUBLISHED BY

JAYA KRISHNA DAS HARIDAS GUPTA

The Chowkhamba Sanskrit Series Office

BENARES.

Printed at the Vidya Vilas Press, Benares.

1936.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

५०

लग्नरत्नाकरः

अर्थात्

बृहल्लग्नजातकम् ।

आजमगढ़ मण्डलान्तर्गतब्रह्मपुरास्थशारदासदनविद्यालयाध्यापकेन
श्रीधर्मदत्तद्विवेदितनुजन्मना
ज्यौतिषाचार्य श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदेन
सङ्गृहीतः ।

तत्कृतसान्वय-शिशुबोधिनी हिन्दी टीका सहितः ।

प्रकाशकः—
जयकृष्णदास-हरिदास गुप्तः—
चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,
बनारस सिटी ।

१९६२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राक्कथन—

जन्मसमय से ही जातकशास्त्र के अनुसार फलादेश का आरम्भ होता है। वह फलादेश स्वदेशीय स्पष्टलग्न के आधीन है। लग्न का ठीक परिज्ञान होने से ही फलादेश सत्य होता है, अन्यथा दुर्घट है। इष्टकाल के परिज्ञान का उपाय, इष्टकाल, इष्टकालीन स्पष्टसूर्य और स्वोदयमान द्वारा तथा उस समय कितनी स्त्रियाँ थी, बालक का शिर किस ओर था, माता का भोजन, वस्त्र, चूडी इत्यादि कैसा था, दीपक का स्थान तेल बत्ती इत्यादि किस प्रकार की थी इत्यादि लक्षणों द्वारा, दो प्रकार से शास्त्रकारों ने बताया है। इष्ट काल का ज्ञान इस समय प्रचलित घटीयन्त्र द्वारा बड़ी सुगमता से होता है (इष्टकाल बनाने के लिये हमारा बनाया "जन्मपत्रदीपक" देखिये)। किन्तु सर्वत्र घटीयन्त्र के अनुपलब्धि के कारण इष्ट समय का ठीक परिज्ञान न होने से जन्मलग्न निश्चित करने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। अत एव लक्षणों द्वारा जन्मलग्न निश्चितकरना शास्त्रकारों ने बतलाया है। उन्हीं लक्षणों के ज्ञान के लिये मैंने इस छोटी सी पुस्तक में सब विषयों का संग्रह इस विषय के तत्त्वजिज्ञासुओं के सौकर्य्य के लिये किया है। अत एव इस से फलजिगमिषुओं की कुछ भी अभीष्टसिद्धि हुई तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

ब्रह्मपुर
आषाढ़ कृ. २ रवी सं० १९९२

पण्डितों का सेवक—
विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठाङ्क
मङ्गलाचरण	१
उपसूतिकासंख्याज्ञान	१
प्रकारान्तर से ,,	२
लग्न में चन्द्रमाके रहने पर विशेष	३
विधवा इत्यादि का ज्ञान	३
अन्यप्रकार से ,,	४
विशेष	४
बालकशब्दज्ञान	५
मातृवस्त्र भोजन का ज्ञान	५
मातृचूडिका ज्ञान	६
अन्यप्रकार से सूतिका वस्त्रज्ञान	६
प्रसवस्थान ज्ञान	७
सूतिका गृहद्वार ज्ञान	७
सूतिका शयन स्थान ज्ञान	८
आस्तरण ज्ञान	९
बालक के शिर आदि का ज्ञान	९
नालवेष्ठित जन्म ज्ञान	१०
और भी ,,	१०
सुख-दुःख से प्रसवज्ञान	११
तैल-दीप-द्वार का ज्ञान	११

विषय	पृष्ठाङ्क
तैल घृत आदि का ज्ञान	१३
पिता के परोक्ष में जन्म का ज्ञान	१३
प्रकारान्तर से ,,	१४
अन्ययोग	१४
पिता के बन्धन का योग	१५
जारज योग	१५
अन्य जारजयोग	१६
मातृत्यक्तयोग	१७
मातृत्यक्त का हीनायुयोग	१८
प्रसवस्थान का ज्ञान	१९
क्रीड़ाभूमि इत्यादि पर जन्म	२०
श्मशान आदि पर जन्म	२०
कारागार आदि में जन्म	२१
जल में जन्म	२१
नौकापर जन्म	२२
प्रसव देश	२२
दीपासम्भवासम्भवादि ज्ञान	२३
सूतिका गृह का स्वरूप	२४
सूर्यादिग्रह वश से सूतिका गृह का ज्ञान	२५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
बालक का स्वरूप ज्ञान	२६
बालक के सत्वादि गुण का ज्ञान	२७
सूर्य और चन्द्रमा का स्वरूप	२७
सूर्य का स्वरूप	२८
चन्द्रमा का स्वरूप	२८
मंगल का स्वरूप	२९
बुध का स्वरूप	२९
गुरु का स्वरूप	३०
शुक्र का स्वरूप	३०
शनि का स्वरूप	३१
ग्रहों का विशेष स्वरूप	३१
ग्रहों का वर्ण	३२
ग्रहों का स्वरूपादिबोधकचक्र	३३
लहसन योग	३४
व्रण (घाव) और लक्षण का योग	३४
द्रेष्काणके ३ प्रकार से अङ्ग विभाग	३५
इनका प्रयोजन	३६

विषय	पृष्ठाङ्क
षडङ्गुलियोग	३७
नेत्र विनाश योग	३८
मूकयोग	३८
म्लेच्छ योग	३८
अन्यम्लेच्छ योग	३९
राजयोग	३९–४०
दरिद्र योग	४१
अन्य शुभाशुभ योग	४१
पितृधन प्राप्ति योग	४१
अरिष्ट योग	४२–४५
भ्रातृहा योग	४६
पितृहा योग	४६
मातृ पितृ विनाश योग	४६
भाव कारक विचार	४७
भाव विचार की विधि	४८
राशियों की शीर्षोदयादि संज्ञा	४९
ग्रहों की उच्चनीच राशियाँ	४९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीजानकीजानये नमः

लग्नरत्नाकरः

अर्थात्

बृहल्लग्नजातकम्

सान्वय शिशुबोधिनी हिन्दीटीकासहितः ।

मङ्गलाचरण—

नत्वा नीलोत्पलश्यामं रामं भुवनभूषणम् ।
ग्रन्थेभ्यः सारमुद्धृत्य लग्नरत्नाकरं ब्रुवे ॥ १ ॥

नीलोत्पलश्यामं भुवनभूषणं रामं नत्वा ग्रन्थेभ्यः सारमुद्धृत्य लग्नरत्नाकरं ब्रुवे ।

मैं (विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी) नील कमल के समान कान्तिवाले, तीनों लोक के भूषण श्री रामचन्द्र जी को नमस्कार करके अनेक ग्रन्थों के सार को लेकर लग्नरत्नाकर (जन्मकालीन लग्न को निश्चित कराने वाले ग्रन्थ) को बनाता हूँ ॥ १ ॥

उपसूतिका संख्या ज्ञान—

अजझषे द्वि२मिता वृषकुम्भयोः
श्रुति४मिता हयकर्कटयोः शराः ५ ।
मकरयुग्मतुलाधरकन्यका-
स्वलिहरौ त्रि३मिता ह्युपसूतिकाः ॥ २ ॥

अजझषे द्विमिता वृषकुम्भयोः श्रुतिमिताः हयकर्कटयोः शराः मकरयुग्मतुलाधर-कन्यकासु अलिहरौ (च) त्रिमिताः हि उपसूतिकाः (भवन्ति) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालक के जन्म समय में यदि मेष या मीन लग्न हो तो उस समय प्रसव करनेवाली स्त्री के समीप २ उपसूतिकायें (प्रसूता की सहायक स्त्रियाँ) होती हैं। वृष या कुम्भ लग्न हो तो प्रसूता के पास ४ सहायक स्त्रियाँ होती हैं। मकर, मिथुन, तुला, कन्या, वृश्चिक और सिंह इन लग्नों में से कोई लग्न वर्तमान हो तो ३ उपसूतिकायें होती हैं। होरारत्न में 'मीन और मेष में १ स्त्री, धनु और कर्क में ५ या ७ स्त्रियाँ होती हैं।' ऐसा लिखा है—

मीने मेषे भवेदेका चतस्रो वृषकुम्भयोः।
संख्याकाः सप्त बाणा वा धनुःकर्कटयोरपि ॥
अन्ये लग्ने च तिस्रः स्युरिति होराविदो विदुः। इति ॥ २ ॥

प्रकारान्तर से उपसूतिका ज्ञान—

चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः।
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्याऽदृश्येऽन्यथा परे: ॥ ३ ॥

चन्द्रलग्नान्तरगतैः ग्रहैः उपसूतिकाः स्युः। दृश्यादृश्ये चक्रार्द्धे बहिः अन्तश्च (उपसूतिकाः ज्ञेयाः)। अपरे अन्यथा (वदन्ति)।

जन्म समय में (१)लग्न से लेकर चन्द्रमा के बीच में जितने ग्रह पड़े हों उतनी स्त्रियाँ प्रसूता स्त्री की सहायक होती हैं।

यदि लग्न चन्द्रमा के बीच का ग्रह अपनी उच्च राशि का अथवा वक्री हो तो उपसूतिकाओं (सहायक स्त्रियों) की संख्या तीन गुनी हो जाती है। एवं यदि अपनी राशि, अपने वर्गोत्तम, अपने नवमांश और अपने द्रेष्काण में स्थित हो तो उपसूतिका की संख्या दूनी हो जाती है। और यदि अपनी नीच राशि का या अस्तंगत हो तो उपसूतिका की संख्या आधी हो जाती है। यदि द्विगुणित और त्रिगुणित दोनों की प्राप्ति एक साथ ही हो तो एक ही लागू होता है। जैसा कि शम्भुहोराप्रकाश में लिखा है—

वक्रोच्चसंस्थे त्रिगुणाः स्वराशौ
दृक्के नवांशे द्विगुणाः स्वबुद्ध्या।

(१) लग्न और चन्द्रमा स्पष्ट करने के लिये मेरा बनाया 'जन्मपत्रदीपक' देखिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीचास्तगेढ्वमुपसूतिकाख्या
होराविदा द्वित्रिगुणे सकृद्वा ॥ इति ।

जितने ग्रह दृश्य चक्रार्द्ध (सप्तम भाव के लग्नोदित अंश के समान अंश से लेकर अष्टम, नवम,···इत्यादि लग्नके उदितांश तक) में पड़े हों, उतनी स्त्रियाँ सूतिकाघर के बाहर और जितने ग्रह अदृश्य चक्रार्ध (लग्न से लेकर द्वितीय, तृतीय·····इत्यादि सप्तम भाव के लग्नोदितांश तुल्य अंश के भीतर) में स्थित हों उतनी स्त्रियाँ सूतिका घर के भीतर होती हैं।

कोई २ इसका अर्थ उलटा करते हैं । किन्तु यही अर्थ बहुसम्मत है।

और उन स्त्रियों का रूप, रङ्ग, जाति, अवस्था, स्वभाव इत्यादि उन्हीं ग्रहों के अनुकूल होता है । और शुभ ग्रहों का योग हो तो सुन्दर वस्त्राभूषणों से युक्त तथा पाप ग्रहों का योग हो तो मलिन वस्त्राभूषणों से युक्त कुरूप स्त्रियाँ होती हैं और शुभ-पाप दोनों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिये । जैसा कि सारावली में लिखा है—

शशिलग्नविवरयुक्ता ग्रहतुल्याः सूतिकाश्च वक्तव्याः ।
अनुदितचक्रार्धयुतैरन्तर्बहिरन्यथा वदन्त्यके ॥
लक्षणरूपविभूषणयोगास्तासां शुभैर्योगात ।
क्रूरैर्विरूपदेहा लक्षणहीनाश्च रौद्रमलिनाश्च ॥
मिश्रैर्मध्यमरूपा बलसहितैः सर्वमेतदिति । इति ॥ ३ ॥

लग्न में चन्द्र होने पर विशेष—

योषितो लग्नगे चन्द्रे तिस्रः स्युरुपसूतिकाः ।

जन्मलग्न में ही यदि चन्द्रमा बैठा हो तो ३ उपसूतिकायें होती हैं ॥

विधवा इत्यादि का ज्ञान—

पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका ।
सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ॥ ४ ॥

पापैः विधवा नारी, क्रूरैः अपि कुमारिका सौम्यग्रहैश्च सुभगा (भवति) इति सूतिकायां विधीयते ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन ग्रहों में जितने पाप ग्रह हों उतनी विधवायें, जितने क्रूर ग्रह हों उतनी कुमारिकायें और जितने शुभ ग्रह हों उतनी सौभाग्यवती स्त्रियाँ सूतिका की सहायता करने वाली होती हैं ॥ ४ ॥

अन्य प्रकार से—

बालां पूर्णः शीतगुः सोमजोऽपि
वृद्धां सौरिः कर्कशां भूमिपुत्रः ।
आदित्येज्यौ सुप्रसूतां भृगुश्च
कुर्वाते स्त्रीं कर्कशां चापि वृद्धाम् ॥ ५ ॥

पूर्णः शीतगुः सोमजोपि बालां, सौरिः वृद्धां, भूमिपुत्रः कर्कशां, आदित्येज्यौ सुप्रसूतां, भृगुश्च कर्कशां वृद्धां चापि स्त्रीं कुर्वाते ।

पूर्ण चन्द्रमा और बुध हों तो बाला स्त्री, शनि हो तो वृद्धा स्त्री, भौम हो तो कर्कशा (दुष्ट स्वभाव वाली), सूर्य और बृहस्पति हों तो सुन्दर सन्तान वाली, और शुक्र हो तो कर्कशा तथा वृद्धा स्त्री होती है। बाला इत्यादि संज्ञायें ग्रन्थान्तरमें लिखी हैं—

आषोडशाद्भवेद्बाला तरुणी त्रिंशका मता ।
पञ्चपञ्चाशका प्रौढा नारी वृद्धा ततः परम् ॥ इति ॥ ५ ॥

विशेषः (जातकोत्तमे)—

पञ्चमे सूर्यपुत्रश्च शशिशुक्रौ च कर्मगौ ।
तत्रैका कन्यका ज्ञेया शिशोर्जन्मनि निश्चितम् ॥ ६ ॥

पञ्चमे सूर्यपुत्रः कर्मगौ शशिशुक्रौ च (भवतस्तदा) तत्र शिशोर्जन्मनि निश्चितं एका कन्यका ज्ञेया ।

जन्मलग्न से पञ्चममें शनि, दशम स्थान में चन्द्रमा या शुक्र व्यवस्थित हों तो प्रसव के समय सूतिका के पास एक कन्या सहायक रहती है ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालकशब्दज्ञान—

मेषात्त्रिपञ्चाननचापलग्ने
विस्मृत्य सर्वं बहु रोदिति स्म।
स्वल्पं घटे स्त्रीवणिजे परेषु
नो रोदिति ज्ञानबलस्य सत्वात् ॥ ७ ॥

मेषात्त्रिपञ्चाननचापलग्ने सर्वं विस्मृत्य बहु रोदिति स्म। घटस्त्रीवणिजे स्वल्पं, परेषु ज्ञानबलस्य सत्वात् नो रोदिति।

मेष से तीन (मेष, वृष, मिथुन) सिंह, धनु लग्नों में उत्पन्न बालक पूर्व जन्म की सम्पूर्ण बातों को भूल कर बहुत रोता है। कुम्भ, कन्या और तुला लग्न में उत्पन्न बालक थोड़ा रोता है। एवं अन्य राशियों (कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन लग्नों) में उत्पन्न बालक पूर्व जन्म की बातों का ज्ञान विद्यमान रहने के कारण तुरत रोदन नहीं करता ॥ ७ ॥

मातृवस्त्र-भोजन ज्ञान—

मातृवस्त्रं वदेत्तत्र वा विलग्ननवांशपात्।
तुर्येशवशतो वाच्यं सूतेः प्राङ्मातृभोजनम् ॥८॥
कठिनं मधुरं रूक्षं लेह्यपेयादिकं मृदु।
लोषणाम्लगुडं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम् ॥९॥
वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं हिमम्।
क्वाथादिना कदशनं सूर्यादेः श्लोकपादतः ॥१०॥

विलग्ननवांशपात् मातृवस्त्रं वदेत्। तुर्येशवशतः सूतेः प्राक् मातृभोजनं वाच्यम्। सूर्यादेः श्लोकपादतः इति तृतीयेनान्वयः।

जन्म समयमें जो नवमांश वर्तमान हो उसके स्वामी के वर्ण के समान माता (प्रसूता) का वस्त्र प्रसवके समय होता है। जन्मलग्न से चौथे भाव के स्वामी के वश प्रसव के पूर्व माता का भोजन बताना चाहिये। सूर्य चतुर्थेश हो तो कठिन (कड़ा), मीठा और रूखा पदार्थ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोजन किये रहती है। चन्द्रमा तुर्येश हो तो चाटने और पीने योग्य कोमल वस्तु का भोजन बताना, भौम हो तो सूखा, अम्ल, गुड़ या दूध का भोजन, बुध हो तो नाना प्रकार का थोड़ा २ भोजन, बृहस्पति हो तो वड़ा इत्यादि अनेक तरह का भोजन, शुक्र हो तो पीने योग्य मीठा और ठण्ढा भोजन, शनि हो तो क्रोध इत्यादि किसी कारण वश कदन्न (खराब अन्न) को भोजन बताना चाहिये ॥ ८-१० ॥

मातृचूडिका ज्ञान—

यावत्संख्या ग्रहाणाश्च चतुर्थे दशमे गृहे ।
दृष्टिः स्यात्तावती ज्ञेया चूडिका वर्णमादिशेत् ॥११॥

चतुर्थे दशमे गृहे ग्रहाणां यावती संख्या दृष्टिश्च (विद्यते) तावती चूडिका ज्ञेया वर्णं (च तत्तुल्यं) आदिशेत् ।

जन्मलग्न से चौथे और दशवें भाव में जितने ग्रह बैठे हों या उन भावों पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो सूतिका के हाथ में उतनी चूड़ियाँ होती हैं। और वर्ण भी उनका उन्हीं ग्रहों के सदृश होता है।

यहाँ भी पाचवें श्लोक के अनुसार दुगुनी तिगुनी इत्यादि संख्या समझनी चाहिये ॥ ११ ॥

अन्यप्रकार से सूतिका वस्त्र ज्ञान—

अरुणधवलपाची पाटला तोयदाभं
रजतधवलयुक्तश्चित्रवर्णोऽथ कृष्णः ।
कनकराजिनवर्णः कर्वुरो बभ्रु स्वच्छः
क्रियत इति सुवाच्यं चाम्बरं सूतिकायाः ॥१२॥

अरुणधवलपाची पाटलः तोयदाभं रजतधवलयुक्तः चित्रवर्णः अथ कृष्णः कनकः अजिनवर्णः कर्बुर बभ्रुः स्वच्छ इति क्रियतः सूतिकाया अम्बरं सुवाच्यम् ।

जन्म समय में मेष राशि का उदय हो तो लालरङ्ग का, वृषलग्न हो तो श्वेतवर्ण का, मिथुन लग्न हो तो पन्ना के रङ्ग का, कर्कलग्न हो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुलाबी वर्ण का, सिंह लग्न हो तो रजत धवल युक्त आस्मानी रङ्ग का, कन्या लग्न हो तो चित्र वर्ण का, तुला लग्न हो तो काले वर्ण का, वृश्चिक लग्न हो तो सोनहुलेरङ्ग का, धनुलग्न हो तो मृगचर्म के सदृश, मकर लग्न हो तो कर्बुर वर्ण का, कुम्भ लग्न हो तो बभ्रुवर्ण (नेवले के वर्ण) का और मीनलग्न हो तो स्वच्छवर्ण का वस्त्र सूतिका का होता है ॥१२॥

प्रसवस्थान ज्ञान—

सिंहकन्याधनुर्मीने कर्के मेषे तथा तुले ।
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमौ निगद्यते ॥ १३ ॥

सिंहकन्याधनुर्मीनकर्के मेषे तथा तुले अन्तरिक्षे जन्म भवेत् । शेषे भूमौ (जन्म) निगद्यते ।

जन्म समय में सिंह, कन्या, धनु, मीन लग्न हो तो अन्तरिक्ष (अर्थात् ऊँची जगह जैसे चारपाई, चौकी, मचान, कोठा इत्यादि पर) बालक का जन्म होता है। और शेष (वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुम्भ इन राशियों में से किसी का) लग्न हो तो भूमि पर या नीची जमीन पर प्रसव होता है ॥ १३ ॥

सूतिकागृहद्वार ज्ञान—

तुलालिकुम्भाजकुलीरलग्ने
वेद्यं प्रसूतागृहमिन्द्रभागे ।
कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने
स्यादुत्तरस्यां हि वृषे प्रतीच्याम् ॥ १४ ॥
मृगारिलग्ने मकरे तथा च
सूतीगृहं स्यात्खलु दक्षिणस्याम् ।
एवं हि लग्नात्परिचिन्तनीयं
सूतीगृहं वै सुधियां प्रदिष्टम् ॥ १५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुलालिकुम्भाजकुलीरलग्ने प्रसूतागृहं इन्द्रभागे वेद्यम् । कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने उत्तरस्यां (दिशि सूतिकागृहं) स्यात् । हि वृषे प्रतीच्याम् । मृगारिलग्ने तथा मकरे च दक्षिणस्यां सूतिगृहं स्यात् खलु । एवं लग्नात् सुधिया प्रदिष्टं सूतीगृहं परिचिन्तनीयम् ।

प्रसव समय में तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मेष और कर्क इन लग्नों में से कोई लग्न हो तो सूतिका का गृह पूर्वदिशा की ओर होता है । कन्या धनु, मीन और मिथुन (अर्थात् द्विस्वभाव संज्ञक राशि का) लग्न हो तो उत्तर दिशा की ओर वृष राशिका उदय हो तो पश्चिम दिशा की ओर तथा सिंह या मकर राशि का लग्न हो तो दक्षिण दिशा की ओर सूतिका का गृह होता है । इस प्रकार जन्मकालीन लग्न के द्वारा पण्डितों से प्रतिपादित सूतिका स्थान का विचार करना चाहिये । इन राशियों का नवमांश लग्न में हो तो भी ऐसा ही फल कहना चाहिये ॥ १४–१५ ॥

सूतिकाशयन स्थान ज्ञान—

प्राच्यादिगृहे क्रियाद्यो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः ।
शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः १६

गृहे प्राच्यादि क्रियादयो द्वौ द्वौ, कोणगता द्विमूर्तयः (कल्प्याः) । षट् त्रिनवान्त्यसंस्थितैः पादैः शय्यासु अपि वास्तुवत् वदेत् ।

सूतिका घर में मेषादि दो दो राशियों को क्रमसे पूर्वादिक चारो दिशाओं में और एक एक द्विस्वभाव (३।६।९।१२) राशियों को आग्नेयादि चारो कोणों में कल्पना करनी चाहिये । अर्थात् मेष या वृष राशि का जन्म लग्न हो तो सूतिका घर के पूर्व भाग में, मिथुन लग्न हो तो आग्नेय कोणमें, कर्क या सिंह राशि का लग्न हो तो दक्षिण दिशा में, कन्या राशि लग्न में स्थित हो तो नैऋत्य कोण में, तुला और वृश्चिक लग्न हो तो पश्चिम दिशा में, धनुलग्न हो तो वायव्य कोण में, मकर या कुम्भ लग्न हो तो उत्तर दिशा में और मीन राशि का लग्न हो तो ईशान कोण में सूतिका शयन स्थान रहता है ।

इसी भाँति सूतिका की शय्या का शिरहाना इत्यादि भी जानना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु छठवाँ, तीसरा, नववाँ और बारहवाँ स्थान चारपाई के चारो पायों की जगह समझना चाहिये। अर्थात् जन्मलग्न राशि की दिशा में चारपाई का शिरहाना होता है। जैसे कर्क राशि का जन्मलग्न है तो दक्षिण दिशा में चारपाई का शिरहाना कल्पना करके कर्क और सिंह राशि को शिरहाने में, तृतीय (कन्या) राशि को चारपाई के दाहिने पाये में, तुला और वृश्चिक राशि को दाहिनी पाटी में, छठवीं (धनु) राशि को पायताने के दाहिने पाया में, सप्तम-अष्टम (धनु-मकर) राशि को पायताने में, नवम (मीन) राशि को पायताने के बायें पाये में, दशम एकादश (मेष-वृष) राशि को बायें ओर की पाटी में और बारहवीं (मिथुन) राशि को शिरहाने के बायें पाया में न्यास करना चाहिये। इसका प्रयोजन यह है कि जो राशि शुभग्रह और अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो, चारपाई का वह अङ्ग (हिस्सा) पुष्ट होता है। और जो अङ्ग पापग्रह से दृष्ट युक्त हो चारपाई का वह भाग कमजोर होता है। यदि अशुभग्रह भी स्वोच्च स्वराशि त्रिकोण राशि मित्र राशि का हो तो अशुभ फल नहीं देता। और जहाँ द्विस्वभाव राशियाँ पड़ी हों वहाँ का भाग नम्र (नमित) होता है। किन्तु यदि शुभ स्वामि से युत दृष्ट हो तो विनतत्व नहीं होता है। जैसा कि शम्भुहोराप्रकाश में कहा गया है—

क्रूरैः स्यादुपघातः स्वोच्चादिगतैर्न चैवायम्।
स्वस्वामिसौम्यदृष्टैर्द्विशरीरैर्नो विनतत्वं च॥ इति॥ १६॥

आस्तरण ज्ञान—

लग्नं पश्यन्ति ये खेटा स्तद्वस्त्रास्तरणं विदुः।

ये खेटा लग्नं पश्यन्ति तद्वस्त्रास्तरणं विदुः।

जितने ग्रह जन्मलग्न को देखते हों उन ग्रहों के अनुसार चारपाई पर बिछौना होता है।

बालक के शिर आदि का ज्ञान—

यत्र राहुस्तत्र शिरो मङ्गले भूमिखण्डनम्।
रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते॥१७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यत्र राहुः तत्र शिरः, मङ्गले भूमिखण्डनम् , रविस्थाने दीपः भवेत् , शनौ लोहं निगद्यते ।

जन्मकाल में जिस दिशा में राहु हो उसी दिशा में बालक का शिर रहता है। जिस दिशा में मङ्गल हो जन्म स्थान से उस दिशा में गड्ढा होता है। जिस दिशा में सूर्य रहता है उस दिशा में दीपक या दीप रखने का स्थान होता है। एवं जिस दिशा में शनि रहता है, उसदिशामें लोह रक्खा रहता है। यहाँ ग्रहों की दिशा १६ वें श्लोक के अनुसार समझनी चाहिये ॥१७॥

नाल वेष्टित् जन्मज्ञान—

छागे सिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ।
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्रीलग्नके तथा ॥१८॥

छागे सिंहे वृषे वृश्चिके लग्ने नालवेष्टितः (जायते) । तथा नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे स्त्रीलग्नके वामे (पार्श्वे नालवेष्टितो जायते) ।

मेष, सिंह, वृष और वृश्चिक इन लग्नों में से कोई लग्न जन्म समय में वर्तमान हो तो नालवेष्टित (नाल से लिपटा हुआ) बालक का जन्म होता है। यदि जन्म काल में पुरुष संज्ञक (१।५) राशि हो तो दाहिने भाग में एवं स्त्री संज्ञक राशि (२।८) का उदय हो तो वाम भाग में नालवेष्टित रहता है ॥ १८ ॥

और भी (बृहज्जातक ५।५)—

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे मन्देऽथवा कुजे ।
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥१९॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे मन्दे अथवा कुजे (सति) राश्यंशसदृशे गात्रे नालवेष्टितः (बालः) जायते ।

जन्मकाल में मेष, सिंह और वृष इन राशियों में से किसी राशि का लग्न हो और उसमें शनैश्चर अथवा मङ्गल बैठा हो तो नाल से लिपटा हुआ बालक पैदा होता है। उस समय लग्न में जिस राशि का नवांश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्तमान हो वह राशि कालाङ्ग चक्र में जिस अङ्ग का हो उस अङ्ग में नाल लिपटा हुआ रहता है। कालाङ्गविभाग वादरायणने कहा है—

मेषः शिरोऽथ वदनं वृषभो विधातुः
वक्षो भवेन्नृमिथुनं हृदयं कुलीरः।
सिंहस्तथोदरमथो युवतिः कटिश्च
वस्तिस्तुलाभृदथ मेहनमष्टमं स्यात्॥
धन्वी चास्योरुयुगं मकटो जानुद्वयं भवति।
जङ्घाद्वितयं कुम्भः पादौ मत्स्यद्वयं चेति। इति॥ १९॥

सुखदुःख से प्रसवज्ञान—

चतुर्थकर्मगाः सौम्याः सुखेन प्रसवंकराः।
त्रिकोणास्तगताः पापाः कष्टनः प्रसवंकराः॥ २०॥

श्लोकानुरूपोऽस्यान्वयः।

जन्मलग्न से चतुर्थ में या दशम स्थान में शुभ ग्रह (पूर्णचन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र) पड़े हों तो सुख पूर्वक प्रसव होता है। एवं त्रिकोण (५।९) और सप्तम स्थान में पाप ग्रह (क्षीणचन्द्रमा, सूर्य, भौम, शनि, राहु, और केतु) व्यवस्थित हों तो प्रसव के समय प्रसूता को बड़ा कष्ट होता है॥ २०॥

तैल–दीप–द्वार का ज्ञान (बृहज्जा. ५।१८)—

स्नेहः शशाङ्कादुदयाच्च वर्त्ति-
र्दीपोऽर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यैः।
द्वारं च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थै-
र्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा॥ २१॥

शशाङ्कात्स्नेहः (वाच्यः)। उदयात् वर्तिः (वाच्या)। अर्कयुक्तर्क्षवशाद् चराद्यः दीपः (वक्तव्यः)। तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैः वा वीर्यसमन्वितैः ग्रहैः द्वारं च ज्ञेयम्।

यदि बालक के जन्म समय में दीपक के तेल का ज्ञान करना हो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रमा के द्वारा तेल का ज्ञान करना चाहिये। अर्थात् जन्मकाल में जिस राशि पर चन्द्रमा बैठा हो उसमें यदि राशि के आदि में ही हो तो दीपक तेल पूर्ण होता है। यदि राशि के अन्त्य भाग पर चन्द्रमा स्थित हो तो दीपक तेल से खाली रहता है। मध्य भाग में चन्द्रमा पड़ा हो तो आधा तेल दीपक में होता है। इस प्रकार अनुपात से दीपक के तेल का ज्ञान करना चाहिये।

कोई २ "चन्द्रमा के पूर्ण रहने पर दीपक तेल पूर्ण, क्षीण रहने पर दीपक तेल रहित होता है" ऐसा अर्थ करते हैं। किन्तु यह अर्थ असङ्ग है क्यों कि ऐसा अर्थ करने पर अमावस्या में सर्वदा अन्धेरे में ही जन्म होना सम्भावित है।

एवं जन्मकालिक लग्न के द्वारा वत्ती का ज्ञान करना चाहिये। अर्थात यदि लग्न का आरम्भ हो तो नई वत्ती और उस समय लग्न का अन्त हो तो सम्पूर्ण बत्ती जली होती है, और बीच में जितना अंश बीता हो उतनी बत्ती जली होती है।

सूर्य से युक्त राशि के द्वारा दीपक का चलना इत्यादि जानना चाहिये। जैसे सूर्य यदि चर राशि (१।४।७।१०) पर व्यवस्थित हो तो दीपक भी किसी के हाथ में इधर उधर चञ्चल रहता है। यदि सूर्य स्थिर राशि (२।५।८।११) में बैठा हो तो दीपक भी स्थिर रहता है। एवं द्विस्वभाव राशि (३।६।९।१२) में सूर्य हो तो दीपक दोनों अवस्था में रहता है।

कोई आचार्य कहते हैं कि जिस राशि पर सूर्य स्थित हो वह राशि जिस दिशा की हो सूतिका घर में उसी दिशा में प्रसव स्थान से दीपक का स्थान होता है।

कोई कहते हैं कि घर का बाहर विभाग करके पूर्वादि क्रम से मेषादि १२ राशियों की कल्पना करके जिस राशि दिशा पर सूर्य पड़ा हो उसी दिशा में दीपक का स्थान बताना चाहिये।

लग्नादि केन्द्रों में स्थित ग्रहों के अथवा बल युक्त ग्रहों के द्वारा सूति-का घर का द्वार जानना चाहिये। जैसे जन्मलग्न से केन्द्र (१।४।७।१०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जो ग्रह बैठा हो उस ग्रह की दिशा की ओर सूतिका गृह का द्वार होता है। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो उस लग्न राशि की जो दिशा हो उस दिशा की ओर सूतिका गृह का द्वार होता है। दिशाओं के स्वामी वशिष्ठसंहिता में लिखे हैं—

दिगीश्वरा भास्करशुक्रभौमराह्वार्किचन्द्रज्ञ सुरार्चिता स्युः। इति ॥ २१ ॥

राशि स्वामी चक्र—

दिशः	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
स्वामिनः	सूर्य	शुक्र	भौम	राहु	शनि	चन्द्र	बुध	गुरु

तैल घृतादि का ज्ञान—

लग्नेन्दुमध्येऽर्कसुत सुतैलं
सूर्यो भवेत्तर्हि घृतस्य दीपम्।
शेषा ग्रहाश्चेत्कटुकं च तैल-
मेवं प्रसूतौ खलु दीपमुक्तम् ॥ २२ ॥

लग्नेन्दुमध्येऽर्कसुते (सति) सुतैलं (ज्ञेयम्) यदि सूर्यो भवेत् तर्हि घृतस्य दीपं (बोध्यम्) चेत् शेषाः ग्रहाः (स्युस्तदा) कटुकं तैलं (भवेत्)। एवं प्रसूतौ दीपं उक्तम् खलु।

जन्मलग्न से लेकर चन्द्रमा के बीच में यदि शनैश्चर पड़ा हो तो दीपक में मीठा तेल जलता है। यदि लग्न-चन्द्रमा के बीच में सूर्य बैठा हो तो घी का दीपक होता है। एवं यदि अन्य ग्रह (मङ्गल, बुध, बृहस्पति और शुक्र) लग्न चन्द्रमा के बीच बैठे हों तो कड़ुआ तेल का दीपक होता है। इस प्रकार प्रसव समय में दीपक का ज्ञान करना चाहिये ॥ २२ ॥

पिता के परोक्ष इत्यादि में जन्म ज्ञान (बृहज्जा. ५।१)—

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति।
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे ॥ २३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन्दौ लग्नं अपश्यति पितुः परोक्षस्य जातः। दिवाकरे चरभे मध्याद् भ्रष्टे विदेशस्थस्य (पितुः जातः)।

जन्मकाल में चन्द्रमा जन्मलग्न को न देखता हो तो पिता के परोक्ष में (उस जगह नहीं रहने पर) बालक का जन्म होता है। पूर्व योग के रहते हुए सूर्य दशम से भ्रष्ट (अर्थात नवम अष्टम या एकादश, द्वादश में स्थित) हो कर चर संज्ञक (मे. क. तु. मक.) राशि में पड़ा हो तो पिता के विदेश रहने पर बालक का जन्म होता है।

इस से यह सिद्ध होता है कि चन्द्रमा लग्न को न देखता हो और सूर्य स्थिर संज्ञक (२।५।८।११) राशियों में लग्न से अष्टम, नवम, एकादश, द्वादश स्थान में पड़ा हो तो स्वदेश में रहते हुए पिता के परोक्ष में जन्म होता है। तथा यदि सूर्य द्विस्वभाव संज्ञक (३।६।९।१२) राशि में व्यवस्थित हो तो पिता के रास्ते में रहते सन्तान का जन्म होता है ॥२३॥

प्रकारान्तर से—

स्थिरे सूर्येऽष्टमे धर्मे लाभे वा चान्त्यसंस्थिते।
न पश्यच्चन्द्रमा लग्नं परोक्षे जायते शिशुः ॥२४॥

स्थिरे अष्टमे, धर्मे लाभे वा च अन्त्यसंस्थिते सूर्ये चन्द्रमा लग्नं न पश्येत्तदा (पितुः) परोक्षे शिशुः जायते।

इस श्लोक का अर्थ २३ श्लोक की टीका में हो गया है। और सरल भी है॥ २४॥

अन्य योग—

उदयस्थेऽपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते।
स्थिते वान्तः क्षपानाथे शशाङ्कसुतशुक्रयोः ॥२५॥

अपि वा मन्दे उदयस्थे, वा कुजे अस्तं समागते वा शशाङ्कसुतशुक्रयोः अन्तः क्षपानाथे स्थिते (परोक्षे शिशुः जातः)।

(क) जन्मकालिक लग्न में शनैश्चर बैठा हो अथवा (ख) जन्म लग्न से सातवें स्थान में मङ्गल पड़ा हो (किसी का मत है कि इन दोनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगों में चन्द्रमा न देखता हो) (ग) अथवा बुध और शुक्र के बीच में चन्द्रमा स्थित हो तो पिता के विदेश रहने पर बालक का जन्म होता है ॥ २५ ॥

पिता के बन्धन का योग (बृहज्जा. ५।७)

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ
सूर्याद् द्यूननवात्मजस्थितौ ।
बद्धस्तु पिता विदेशगः
स्वे वा राशिवशादथो पथि ॥ २६ ॥

क्रूरर्क्षगतौ अशोभनौ सूर्यात् द्यूननवात्मजस्थितौ (तदा) तु राशिवशात् विदेशगः वा स्वे अथो पथि पिता बद्धः ।

क्रूर ग्रह की राशियों (मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ, कृष्णपक्ष में चन्द्रमा के क्षीण रहने पर कर्क, बुध के पाप युक्त होने पर मिथुन और कन्या) में से किसी राशि पर मङ्गल और शनैश्चर बैठे हों और सूर्य से पांचवें सातवें एवं नववें स्थान पर भी हों तो उत्पन्न हुए बालक का पिता बँधा होता है । विशेषता यह है कि यदि चर संज्ञक (१।४। ७।१०) राशि में सूर्य स्थित हो तो विदेश में, स्थिर संज्ञक (२।५।८।११) राशि में सूर्य पड़ा हो तो अपने ही देश में एवं द्विस्वभाव संज्ञक (३।६ ९।१२) राशि में सूर्य बैठा हो तो मार्ग (रास्ते) में बालक का पिता बद्ध होता है ॥ २६ ॥

जारज योग (बृहज्जा. ५।६)

न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षते
न वा शशाङ्कं रविणा समागतम् ।
सपापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी
परेण जातं प्रवदन्ति निश्चयात् ॥ २७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुः लग्नं इन्दुं च न निरीक्षते, वा रविणा समागतं शशाङ्कं न (निरीक्षते) अथवा सपापकः शशी अर्केण युतः (तदा) निश्चतात् परेण जातं प्रवदन्ति ।

(१) यदि बृहस्पति जन्मलग्न या चन्द्रमा (ये दोनों चाहे अलग २ हों चाहे इकट्ठा हों) को न देखता हो, (२) वा सूर्य से युक्त चन्द्रमा (अमावस्या के दिन क्षीण रहता है) को बृहस्पति न देखता हो, (३) अथवा पाप ग्रह (शनि वा मङ्गल) युक्त चन्द्रमा सूर्य से भी युक्त हो तो उत्पन्न हुआ बालक जारज (किसी यार का प्रसाद) होता है। यदि लग्न या चन्द्रमा बृहस्पति के नवमांश में पड़ा हो तो प्रथम योग विफल हो जाता है। यदि चन्द्रमा बृहस्पति की राशि, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश या त्रिंशांश में स्थित हो वा कहीं भी बृहस्पति से युक्त हो तो बालक जारज नहीं होता। जैसा कि भगवान् गार्गि ने कहा है—

गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते वान्यराशिगे ।
तद्द्रेष्काणे नवांशे वा न परैर्जात इष्यते ॥ इति ॥ २७ ॥

अन्य योग—

षष्ठाष्टमेशौ कुजचन्द्रयुक्तौ
चतुर्थगौ, वा नवमारिनाथौ ।
पापैर्युतौ क्वापि गृहे स्थितौ स्तः
परेण जातः पुरुषस्तदा स्यात् ॥ २८ ॥

कुजचन्द्रयुक्तौ षष्ठाष्टमेशौ चतुर्थगौ, वा नवमारिनाथौ पापैः युतौ क्वापि गृहे स्थितौ स्तः तदा पुरुषः परेण जातः स्यात् ।

जन्मलग्न से छठवें और आठवें स्थान के स्वामी मङ्गल और चन्द्रमा से युक्त हो कर चौथे भाव में बैठे हों अथवा नवमेश और षष्ठेश दोनों पापग्रहों से युक्त हो कर कहीं (किसी स्थान में) पड़े हो तो भी वह बालक दूसरे का जन्मा हुआ होता है ॥ २८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसव ज्ञान (सारावली ९।२)—

शीर्षोदये विलग्ने
मूर्धाप्रसवोऽन्यथोदये चरणौ।
उभयोदये च हस्तौ
शुभदृष्टे शोभनोऽन्यथा कष्टः॥ २९॥

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धाप्रसवः, अन्यथा उदये चरणौ, उभयोदये च हस्तौ, शुभदृष्टे शोभनं अन्यथा कष्टः (भवति)।

जन्म समय में शीर्षोदय (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ) राशियों में किसी का उदय हो तो बालक की उत्पत्ति शिर की ओर से होती है। पृष्ठोदय (मेष, वृष, कर्क, धनु और मकर) राशि का लग्न हो तो बालक का जन्म पैर की ओर से होता है। एवं यदि उभयोदय (मीन) राशि का जन्मलग्न हो तो पहले हाथ की ओर से बालक पैदा होता है।

यदि जन्मलग्न पर शुभग्रह, (पूर्णचन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र) की दृष्टि हो तो बालक का जन्म सुख पूर्वक और जन्मलग्न पर पाप ग्रह (क्षीण चन्द्र, सूर्य, मङ्गल, शनैश्चर और पाप युक्तबुध) की दृष्टि हो तो बालक का जन्म पीड़ा से होता है॥ २९॥

मातृत्यक्त योग (बृहज्जा. ५।१४)—

आरार्कजयोस्त्रिकोणगे
चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया।
दृष्टेऽमरराजमन्त्रिणा
दीर्घायुः सुखभाक्च स स्मृतः॥ ३०॥

आरार्कजयोः त्रिकाणगे अस्ते च चन्द्रे (जातः) अम्बया विसृज्यते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(किन्तु) अमरराजमन्त्रिणा दृष्टे (चन्द्रे) स (जातः) दीर्घायुः सुखभाक् च स्मृतः ।

मङ्गल और शनैश्चर से (चाहे ये दोनों एक ही स्थान में हों या ऐसे स्थान में हों जहां से दोनों से) नववें, पाचवें या सातवें स्थान में चन्द्रमा पड़ा हो तो पैदा हुए सन्तान को माता परित्याग कर देती है । इस योग में यदि चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो माता से छोड़ा हुआ भी वह बालक वहुत दिनों तक जीने वाला और सुखी होता है ॥ ३० ॥

मातृत्यक्त का हीनायु योग—

पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजेऽस्ते
त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाऽऽये ।
सौम्येऽपि पश्यति तथा विधहस्तमेति
सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ ३१ ॥

पापेक्षिते तुहिनगौ उदये कुजे अस्ते त्यक्तः (जातः) विनश्यति । तथा (पापेक्षिते चन्द्रे) कुजार्कजयोः आये (स्थितयोः) मात्रा त्यक्तो बालः विनश्यति । सौम्ये अपि पश्यति तथा विधं हस्तं एति । सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽपि अनायुः (भवति) ।

जन्म समय में पापग्रह (सूर्य या शनैश्चर) से दृष्ट चन्द्रमा लग्न में पड़ा हो और उससे सातवें स्थान में मङ्गल बैठा हो तो माता से छोड़ा हुआ सन्तान मर जाता है । अथवा पापग्रह (सूर्य) से दृष्ट चन्द्रमा लग्न में पड़ा हो और उससे ग्यारहवें स्थान में मङ्गल और शनैश्चर ये दोनों बैठे हों तो भी माता से परित्यक्त सन्तति की मृत्यु हो जाती है । अथवा पापग्रह (सूर्य, मंगल और शनि) से दृष्ट चन्द्रमा जन्मलग्न में बैठा हो और उसको शुभग्रह भी देखते हों तो माता द्वारा छोड़ा हुआ भी सन्तान देखने वाले ग्रह के समान वर्ण (जाति) वाले किसी मनुष्य के हाथ लगता है । अर्थात् चन्द्रमा को देखने वाला बृहस्पति या शुक्र हो तो वह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालक ब्राह्मण के हाथ, चन्द्रमा को सूर्य मंगल देखते हों तो वह बालक क्षत्रिय के हाथ, चन्द्रमा को बुध देखता हो तो वह बालक वैश्य के हाथ, चन्द्रमा को शनैश्चर देखता हो तो वह बालक शूद्र के हाथ लगता है। यदि कई ग्रह चन्द्रमा को देखते हों तो उन में सब से बली ग्रह के वर्ण वाले मनुष्य के पल्ले वह बालक पड़ता है। और यदि केवल पाप ग्रह ही देखता हो बृहस्पति न देखता हो तो बालक दूसरे के हाथ पड़ कर भी नहीं जीता है ॥ ३१ ॥

जन्म स्थान ज्ञान—

पितृमातृगृहेषु तद्बला-
तरुशालादिषु नीचगैः शुभैः ।
यदि नैकगतैस्तु वीक्षितौ
लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ ३२ ॥

तद्बलात् पितृमातृगृहेषु, नीचगैः शुभैः तरुशालादिषु, यदि तु लग्नेन्दू एकगतैः (ग्रहैः) न वीक्षितौ (तदा) विजने प्रसूयते ।

पितृ संज्ञक, पितृव्य संज्ञक, मातृ संज्ञक, मातृ स्वसृ संज्ञक इन ग्रहों में जो सबसे बलवान हो उसी के घर में अर्थात् पितृ संज्ञक ग्रह बलिष्ठ हो तो पिता के घर में, पितृव्य संज्ञक ग्रह सब से बली हो तो पितृव्य (चाचा) पितृष्वसृ (बूआ) इत्यादि के घर में, मातृ संज्ञक ग्रह सर्वाधिक बली हो तो माता के घर में और मातृष्वसृग्रह सब से अधिक बली हो तो मौसी इत्यादि के घर में सन्तान का जन्म होता है। यदि सब शुभग्रह अपने २ नीच राशि के पड़े हों तो पेड़ के नीचे, मकान के समीप वन-पर्वत आदि के करीब सन्तान का जन्म होता है। एक स्थान में बैठे हुए सब ग्रह लग्न और चन्द्रमा को न देखते हों तो निर्जन स्थान में जन्म होता है। ग्रहों की पितृ पितृव्यादि संज्ञा बृहज्जातक (४।५) में लिखी है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञकौ
शनैश्चरेन्दू निशि तद्विपर्ययात् ।
पितृव्यमातृस्वसृसंज्ञितौ तु ता-
वथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥ इति ॥ ३२ ॥

क्रीडादिभूमि में प्रसवज्ञान—

मन्देऽब्जगते विलग्नके
बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात् ।
क्रीडाभवने सुरालये
सोषरभूमिषु च प्रसूयते ॥ ३३ ॥

मन्दे अब्जगते विलग्नगे क्रमात् बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रीडाभवने सुरालये सोषरभूमिषु च प्रसूयते ।

यदि जलचर राशि का शनैश्चर जन्मलग्न में व्यवस्थित हो और बुध सूर्य और चन्द्रमा से पूर्णदृष्टिद्वारा देखा जाता हो तो क्रमसे विहार भवन, देवमन्दिर, और ऊसर भूमि पर बालक का जन्म होता है ॥३३॥

श्मशानादि में प्रसवज्ञान—

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने
रम्ये सितेन्दू गुरुरग्निहोत्रे ।
रविर्नरेन्द्रामरगोपुरेषु
शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥ ३४ ॥

नृलग्नगं (मन्दं) प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने, सितेन्दू रम्ये, गुरुः अग्निहोत्रे, रविः नरेन्द्रामरगोकुलेषु, ज्ञः शिल्पालये प्रसवं करोति ।

मनुष्य (मिथुन, कन्या, धनका पूर्वार्ध, तुला और कुम्भ) राशियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में से किसी राशिमें व्यवस्थित शनैश्चर लग्न में बैठा हो और उसको मङ्गल देखता हो तो श्मशान भूमि (मुर्दा जलाने की जगह) में, चन्द्रमा या शुक्र देखता होतो रमणीय स्थान में, बृहस्पति देखता हो तो अग्निहोत्र शाला में, सूर्य देखता हो तो राजा के घर देवता के मन्दिर या गोशाला में और बुध देखता हो तो शिल्प (थवई) के घर पर जन्म कहना चाहिये ॥ ३४ ॥

कारागृहादि जन्म स्थान ज्ञान—

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते
गुप्त्यां पापनिरीक्षिते यमे ।
अलिकर्कियुते विलग्नगे
सौरे शीतकरेक्षितेऽवटे ॥ ३५ ॥

उदयोडुपयोः व्ययस्थिते यमे पापनिरीक्षिते गुप्त्यां, अलिकर्कयुते सौरे विलग्नगे शीतकरेक्षिते अवटे (जन्म भवति) ।

लग्न और चन्द्रमा दोनों से (अर्थात् दोनों एक ही राशि में बैठे हों और उन से) बारहवें स्थान में पाप ग्रह (सूर्य या मङ्गल) से देखा जाता हुआ शनैश्चर पड़ा हो तो उस सन्तति का जन्म जेलखाने में होता है ।

वृश्चिक या कर्क जन्म लग्न हो उसमें शनैश्चर स्थित हो उसे चन्द्रमा देखता हो तो गड़हे या खाई में उस बालक का जन्म होता है ॥ ३५ ॥

जलमें जन्म ज्ञान—

आप्योदयमाप्यगः शशी
सम्पूर्णः समवेक्षतेऽथवा ।
मेषूरणबन्धुलग्नगः
स्यात्सूतिः सलिले न संशयः ॥ ३६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आप्योदयं आप्यगः शशी, अथवा (आप्योदयं) सम्पूर्णः (शशी) समवेक्षते, (वा आप्यराशिगः शशी) मेपूरणबन्धुलग्नगः (तदा) सूतिः सलिले, (इति) संशयः न ।

जलचर (मकर का पश्चार्ध, कर्क और मीन) राशियों में से किसी राशि का उदय हो और चलचर राशि पर चन्द्रमा हो, अथवा जलचर राशि के लग्न को सम्पूर्ण बिम्ब वाला चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो, अथवा चलचर राशि का चन्द्रमा दशवें चौथे या जन्म लग्न में पड़ा हो तो वह बालक निश्चय जल के समीप जन्मा हुआ होता है ॥ ३६ ॥

नौकास्थ जन्म ज्ञान—

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते शुभे सुखे ।
लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा चन्द्रे पोतगता प्रसूयते ॥३७॥

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते शुभे सुखे, अपि वा जलजे लग्ने अस्तगे चन्द्रे पोतगता प्रसूयते ।

पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशि में स्थित हो, बुध जन्म लग्न में पड़ा हो और बृहस्पति चतुर्थ स्थान में बैठा हो तो बालक का जन्म नौका पर होता है । अथ वा जलचर राशि का जन्म लग्न हो और सप्तम में चन्द्रमा पड़ा हो तो भी बालक का जन्म नौका इत्यादि पर होता है ॥ ३७ ॥

प्रसवदेश ज्ञान—

राश्यंशसमानगोचरे
मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे ।
स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिरे
बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ ३८ ॥

राश्यंशसमानगोचरे चरे मार्गे, स्थिरे गृहे जन्म, स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिर (जन्म) अंशकर्क्षयोः बलयोगात्फलम् (वाच्यम्) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म काल में जिस राशि या नवमांश का उदय हो उस लग्न राशि और नवमांश राशि के समान प्राणी जिस २ स्थान-पर सञ्चार करता है उसी स्थान पर प्रसव (जन्म) कहना चाहिये (जैसे वृषलग्न में कर्क राशि का नवमांश वर्तमान हो तो जंगल में जल के पास जन्म होता है इत्यादि) और जो वह राशि और नवांश राशि चर संज्ञक हो तो उसके सदृशप्राणी जिस मार्ग पर होकर चलता हो उस मार्ग में जन्म बताना चाहिये। ऐसे ही स्थिर संज्ञक (२।५।८।११) राशि या नवांश हो तो उस के घर में जन्म बताना चाहिये। तथा द्विस्वभाव संज्ञक राशि या नवांश हो तो उसके घर से बाहर जन्म कहना चाहिये। यदि च जन्म लग्न राशिका ही नवांश वर्तमान हो तो उसके समान प्राणी के घर में जन्म कहना चाहिये और जहाँ जन्म लग्न राशि और नवांश राशि दोनों भिन्न भिन्न हो वहाँ दोनों में जो अधिक बलवान् हो उसके तारतम्य से जन्म स्थान का निर्णय करना चाहिये ॥ ३८ ॥

दीपासंभवासंभवादिज्ञान (बृहज्जा० ५।१७)—

मन्दर्क्षांशे शशिनि हिबुके मन्ददृष्टेऽब्जगे वा
तद्युक्ते वा तमसि शयनं नीचसंस्थैश्च भूमौ।
यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु तद्वत्
पापैश्चन्द्रात्स्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः ॥३९॥

शशिनि मन्दर्क्षांशे, वा हिबुके, वा मन्द दृष्टे वा अब्जगे, वा तद्युक्ते तमसि (प्रसवं वाच्यम्)। नीच संस्थैः (ग्रहैः) च भूमौ शयनं (वाच्यम्)। राशिः यद्वत हरिजं व्रजति तद्वत् गर्भमोक्षः भवति । चन्द्रात स्मरसुखगतैः पापैः जनन्याः क्लेशमाहुः ।

चन्द्रमा (१) शनैश्चर की राशि अथवा नवमांश में बैठा हो, (२) वा जन्म लग्न से चौथे स्थान में व्यवस्थित हो, (३) वा चन्द्रमा को शनैश्चर पूर्णदृष्टिसे देखता हो, (४) वा कर्क या मीन राशि का होकर किसी भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान में चन्द्रमा पड़ा हो, (५) वा चन्द्रमा शनैश्चर से संयुक्त हो तो अन्धकार में जन्म होता है। किन्तु इन योगों में यदि चन्द्रमा को सूर्य देखता हो तो प्रकाश में जन्म बताना चाहिये क्यों कि यवनाचार्यने लिखा है—

सौरांशकस्थे शशिनि प्रलग्ने
जले जलांशाख्यकमाश्रिते वा।
स्वांशस्थिते केन्द्रगतेऽर्कजे वा
जातस्तमिस्रे यदि नार्क दृष्टः॥ इति॥

किसी का मत है कि सूर्य बलवान् हो और मङ्गल से देखा जाता हो तो पूर्व ५ योगों के होने पर भी प्रकाश ही रहता है। जैसा कि सारावली में लिखा है—

बलवति सूर्ये दृष्टे बहुप्रदीपा धरा कपुत्रेण।
अन्यैर्व्यपगतवीर्यैः सूतौ ज्योतिस्तृणैर्भवति॥ इति॥

तीन या तीन से अधिक ग्रह अपने २ नीच राशि में व्यवस्थित हों तो सूतिका का शयन जमीन पर होता है।

जन्मलग्न में स्थित राशि जिस प्रकार क्षितिज में उदय होती हो उसी प्रकार से गर्भमोक्ष होता है। अर्थात् यदि शीर्षोदय सञ्ज्ञकराशिलग्न हो तो उत्तान मुख और पृष्ठोदय राशि का लग्न हो तो पीठ ऊपर किये हुए पैदा होता है। कोई २ कहते हैं कि शीर्षोदय लग्न हो तो शिर के बल और पृष्ठोदयराशि का जन्मलग्न हो तो पैर के बल और उभयोदय (मीन) राशि का लग्न हो तो हाथों के बल बालक पैदा होता है।

पाप ग्रह चन्द्रमा से युक्त हों या लग्न से सातवें अथवा चौथे पड़े हों तो प्रसव काल में माता को बड़ा कष्ट होता है॥ ३९॥

सूतिका गृह का स्वरूप (लघुजातक)—

गुरुरुच्चो दशमस्थो द्वित्रिचतुर्भूमिकं करोति गृहम्।
धनुषि सबले त्रिशालं द्विशालमन्येषु विमलेषु॥४०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्चः गुरुः दशमस्थः द्वित्रिचतुर्भूमिकं गृहं करोति । सबले (गुरौ) धनुषि (स्थिते) त्रिशालं अन्येषु यमलेषु द्विशालम् (स्यात्) ।

अपनी उच्चराशि (कर्क) का बृहस्पति दशमस्थान में बैठा हो तो दो महला, तीन महला या चौमहला घर होता है । अर्थात् यदि बृहस्पति परमोच्चांश से आगे के अंश में स्थित होतो दोमहला, परमोच्चांश से पूर्व अंश में हो तो तीन महला और ठीक परमोच्चांश पर स्थित हो तो चौ-महला सूतिका गृह होता है । एवं बलवान् बृहस्पति धनू राशिका होकर दशम में पड़ा हो तो त्रिशाल (३ महला) तथा अन्य द्विस्वभाव राशि (मिथुन, कन्या और मीन) में स्थित होकर दशम में व्यवस्थित होतो दो महला सूतिकागार होता है ॥ ४० ॥

रव्यादि ग्रहवशसे सूतिका गृह ज्ञान—

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ
काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पोद्भवम् ।
रम्यं चित्रयुतं नवञ्च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरं
चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनां सामन्तपूर्वां वदेत् ॥४१॥

अर्कजे (बलवति) जीर्णं संस्कृतं, क्षितिसुते दग्धं, शीतगौ नवं, रवौ काष्ठाढ्यं न दृढं, शशिसुते तन्नैकशिल्प्युद्भवम्, भृगुजे रम्यं चित्रयुतं नवं च, जीवे दृढं मन्दिरं (वाच्यम्) चक्रस्थैः च सामन्तपूर्वां यथोपदेशरचनां वदेत् ।

सब ग्रहों की अपेक्षा शनैश्चर बली हो तो सूतिका घर मरम्मत किया हुआ पुराना जानना । एवं सबसे बली मङ्गल हो तो जला हुआ, चन्द्रमा बली हों तो नया (शुक्ल पक्ष हो तो खूब लिपा पुता सूतिकागार समझना), सूर्य बली हो तो अधिक काठ का बना हुआ कमजोर, बुध बली हो तो अनेक चित्रकारों द्वारा बनाया हुआ अनेक चित्रकारियों से युक्त, शुक्र बली होतो परममनोहर, नाना चित्रकारियों से युक्त नूतन, और बृहस्पति बलवान् हो तो अत्यन्त पुष्ट सूतिका घर रहता है । इन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहों के समीप (आगे, पीछे, बगल में) जो ग्रह पड़ा हो उसके अनुसार सूतिकागार के आगे पीछे या बगल में उसके अनुरूप अन्यान्य गृहों को देशकाल इत्यादि की परिस्थिति के अनुकूल बताना चाहिये ॥ ४१ ॥

बालक का स्वरूप ज्ञान—

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्या-
द्वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुर्वा ।
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः
कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ ४२ ॥

लग्ननवांशपतुल्यतनुः वा वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुः स्यात् । चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः (बालः स्यात्) कादिविलग्नविभक्तभगात्रः (भवति) ।

(१) जन्म समय में लग्न में जो नवांशक हो उसके स्वामी के सदृश बालक का आकार (रूप, गुण, वर्ण, प्रकृति इत्यादि) होता है ।

(२) अथवा जन्म काल में जो ग्रह सब से बली हो उसके समान रूप, गुण, वर्ण इत्यादि वाला बालक होता है । (यहां यदि लग्नवांशस्थ राशि विशिष्टबलवती हो तो उसके स्वामी के सदृश और ग्रहबलवान् हो तो उस ग्रह के समान बालक का रूप रङ्ग आदि समझना चाहिये) ।

(३) अथवा चन्द्रमा जिस नवांश पर हो उस नवांशराशि के स्वामी (ग्रह) के समान बालक का स्वरूप होता है ।

जन्मलग्न से आरम्भ करके शीर्षादि का विभाग कल्पना करके जो राशि जिस अङ्गमें पड़े उसके अनुसार बालक का वह अङ्ग ह्रस्व दीर्घ इत्यादि होता है । अर्थात् लग्नादि राशियों को "कालाङ्गानि वराङ्गमाननमुर" इत्यादि की नाईं शिर, मुख इत्यादि कल्पना करे जैसे लग्न को शिर, द्वितीयस्थान को मुख, तृतीयस्थानस्थ राशि को छाती, चतुर्थस्थराशि को हृदय, पञ्चमस्थराशि को कोख, षष्ठस्थ राशिको कटि, सप्तमस्थराशिको

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्ति (पेड़ू=लिङ्ग और नाभि के बीचका स्थान) अष्टमस्थराशि को लिङ्ग (स्त्री या पुरुष का द्योतक चिह्न), नवमस्थ राशि को अण्डकोश, दशमस्थ राशि को ऊरू, एकादशस्थ राशिको जानु और द्वादशभावस्थ राशि को जङ्घा-पैर कल्पना करे। "पूर्वार्द्धे विषयादय" इस श्लोक के अनुसार जो राशि ह्रस्व दीर्घ इत्यादि लिखी है वह राशि या उस राशिका स्वामी जिस अङ्ग में पड़े वह अङ्ग उस बालक का ह्रस्व या दीर्घ होता है। जहाँ कई अङ्गराशिस्वामी बैठे हों वहाँ बलवान् ग्रह के अनुसार अङ्ग की ह्रस्वता या दीर्घता कहे। जहाँ कोई ग्रह न बैठे हों वहाँ राशि के वश से ही ह्रस्वता आदि का आदेश करे॥ ३२॥

त्रिंशांशे यस्य भानुः स्यात्तद्वत्सत्वादिभिर्युतः।
ससतारसरातार्थै स्मृताः सूर्यादितो गुणाः ॥४३॥

यस्य त्रिंशांशे भानुः स्यात् तद्वत् सत्वादिभिः युतः (बालको भवति)। सूर्यादितः ससतारसराताः गुणा च स्मृताः।

जिस ग्रह के त्रिशांश में सूर्य बैठा हो उस ग्रह के तुल्य बालक का सत्वादि गुण होता है। सूर्य और चन्द्रमा का सत्वगुण, मङ्गल का तमोगुण, बुध का रजोगुण, बृहस्पति का सतोगुण, शुक्र का रजोगुण, और शनि का तमोगुण होता है॥ ४३॥

सूर्य और चन्द्र का स्वरूप—

मधुपिङ्गलदृक् चतुरस्रतनुः
पित्तप्रकृतिः सवितात्पकचः।
तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः
प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक्शुभदृक् ॥ ४२ ॥

मधुपिङ्गलदृक्, चतुरस्रतनुः, पित्तप्रकृतिः अल्पकचः सविता। तनुवृत्ततनुः बहु वातकफः प्राज्ञः मृदुवाक् शुभदृक् शशी (अस्ति)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहत के समान पीला नेत्र, चतुरस्र (दोनों भुजा फैलाने पर जितनी लम्बाई हो उतना कद में ऊँचा) शरीरवाला, पित्तप्रधान प्रकृति वाला और थोड़े बालों वाला सूर्य का स्वरूप है । पतली और गोलाकार शरीर, अधिक वातकफ वाली प्रकृति, मीठा वचन, सुन्दर (दर्शनीय) आखोंवाला और बुद्धिमान् चन्द्रमा है ।। ४४ ।।

सूर्य का स्वरूप—

चतुरस्रो नात्युच्च-
स्तनुकेशः पैत्तिकोऽस्थिसारश्च ।
शूरो मधुपिङ्गाक्षो
रक्तश्यामः पृथुश्चार्कः ॥ ४५ ॥

चतुरस्रः नात्युच्चः तनुकेशः पैत्तिकः अस्थिसारः शूरः मधुपिङ्गलाक्षः रक्तश्यामः पृथुः च अर्कः (अस्ति) ।

चतुरस्र शरीर, मध्यमकद, छोटे २ बाल, पित्तप्रधान प्रकृति, मजबूत हड्डी शूर (युद्ध में पराक्रमी), मधु के समान नेत्र, लाल और काला मिश्रित वर्ण और मोटा शरीर सूर्य का है ।। ४४ ।।

चन्द्रमाका स्वरूप—

स्वक्षः प्राज्ञो गौर-
श्चपलः कफवातिको रुधिरसारः ।
मृदुवाणी प्रियसख-
स्तनुवृत्तश्चन्द्रमाः प्रांशुः ॥ ४६ ॥

स्वक्षः प्राज्ञः गौरः चपलः कफवातिकः रुधिरसारः मृदुवाणी प्रियसखः तनुवृत्तः प्रांशुः चन्द्रमाः (अस्ति) ।

सुन्दर नेत्र, बुद्धिमान्, गोरा शरीर, चञ्चल स्वभाव, कफवात वाली प्रकृति, रुधिर की अधिकता, कोमल वचन, प्रिय मित्र, गोलाकार शरीर और ऊँचा कद चन्द्रमा का है ।। ४५ ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौम का स्वरूप—

हिंस्रो ह्रस्वस्तरुणः
पिङ्गाक्षः पैत्तिको दुराधर्षः।
चपलः सरक्तगौरो
मज्जासारश्च माहेयः॥ ४६॥

हिंस्रः ह्रस्वः तरुणः पिङ्गाक्षः पैत्तिकः दुराधर्षः चपलः सरक्तगौरः मज्जासारश्च माहेयः (अस्ति)।

हिंसा करने वाला, नाटा कद, जुवावस्था, पीला नेत्र, पित्तप्रकृति, बलवान, चञ्चल स्वभाव, लाल और गौर वर्ण, मज्जासार (मज्जा की अधिकता) वाला मङ्गल है॥ ४६॥

बुध का स्वरूप—

क्रूरदृक्तरुणमूर्तिरुदारः
पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः।
श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः
पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च॥ ४७॥

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिः उदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ज्ञः (अस्ति)।

क्रूरदृष्टि (टेढ़ी नजर) वाला, नौजवान शरीर, उदार स्वभाव, पित्त प्रधान प्रकृति वाला, चपल स्वभाव, पतली कमर वाला, प्रत्येकबातों में द्व्यर्थकशब्द बोलने वाला, सर्वदा हास्य की रुचि रखने वाला, पित्तवात और कफ तीनों प्रकृतिवाला बुध का स्वरूप है॥ ४७॥

और भी—

मध्यमरूपः प्रियवाक्
दूर्वाश्यामशिरास्ततो निपुणः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वक्सारस्त्रिस्थूलः

सततं हृष्टश्च चन्द्रसुतः ॥ ४९ ॥

मध्यमरूपः प्रियवाक् दूर्वाश्यामशिरा ततो निपुणः त्वक्सारः त्रिस्थूलः सततं हृष्टश्च चन्द्रसुतः (अस्ति)

मध्य कद वाला, प्रिय बोलते वाला, दूब के सदृश श्यामरङ्ग और काला बाल वाला, प्रत्येक कार्यो में दक्ष, पुष्ट चर्म वाला, तीन स्थानों पर स्थूल और सर्वथा प्रसन्न चित्तवाला बुध है ॥ ४९ ॥

गुरु का स्वरूप—

मधुनिभनयनो मतिमा-

नुपचित्तमांसः कफात्मको गौरः ।

ईषत्पिङ्गलकेशो

मेदःसारो गुरुर्दीर्घः ॥ ५० ॥

मधुनिभनयनः मतिमान् उपचितमांसः कफात्मको गौरः ईषत्पिङ्गलकेशः मेदःसारः दीर्घश्च गुरुः अस्ति ।

मधुके ऐसा पीला नेत्र और अधिक मांस वाला बुद्धिमान् कफ प्रकृति वाला गौर वर्ण वाला, कुछ २ पीला केश वाला मेदा की पुष्टिवाला और लम्बे कद वाला गुरु का स्वरूप है ॥ ५० ॥

शुक्रका स्वरूप—

श्यामो विस्पष्टपर्वा

सितमूर्धजः सुखी कान्तः ।

कफवात्तिको मधुरवाक्

भृगुपुत्रः शुक्रसारश्च ॥ ५१ ॥

श्यामः विस्पष्टपर्वा सितमूर्धजः सुखी कान्तः कफवार्तिकः मधुरवाक् शुक्रसारश्च भृगुपुत्रः (अस्ति) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्यामवर्ण का शरीर, स्पष्ट दिखाई पड़ने वाले अङ्गो के सब जोड़, कुछ काले और घुघराले बाल, सुखी सुन्दरस्वरूप कफ और वायु प्रकृति मधुर वाणी, शुक्र की अधिकता, ये सब गुण शुक्र में होते हैं ॥ ५१ ॥

शनि का स्वरूप—

कृशदीर्घः पिङ्गाक्षः
कृष्णः पिशुनोऽलसोऽनलप्रकृतिः ।
स्थूलनखदन्तरोमा
सूर्यसुतः स्नायुसारश्च ॥५२ ॥

कृशदीर्घः पिङ्गाक्ष कृष्णः पिशुनः अलसः अनल प्रकृतिः स्थूलनखदन्तरोमा स्नायुसारश्च सूर्यसुतः (अस्ति) ।

दुर्बल और लम्बा शरीर, पीलानेत्र कृष्णवर्ण चुगलखोर स्वभाव युक्त अग्निप्रकृति, स्थूल नाखून दाँत और बाल वाला तथा स्नायु सार (नसों की अधिकता से युक्त) शनि का स्वरूप है ।। ५२ ॥

ग्रहों का विशेष स्वरूप—

बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्धजेक्षणो
बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः ।
भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः
कफानिलात्मा सितवक्रमूर्धजः ॥ ५३ ॥

बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्धजेक्षणः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः बृहस्पतिरस्ति । सुखी कान्तवपुः सुलोचनः कफानिलात्मा सितवक्रमूर्द्धजः भृगुरस्ति ।

लम्बा कद पीले बाल और नेत्र कफ प्रधान प्रकृति और श्रेष्ठबुद्धि बृहस्पति की है । सुखी, सुन्दर शरीर सुन्दर नेत्र कफ और वात प्रकृति, सफेद और टेड़े बाल ये सब गुण शुक्र के हैं ॥ ५३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दोऽलसः कपिलदृक्कृशदीर्घगात्रः
स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा ।
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसे च मज्जा
मन्दार्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ ५४ ॥

अलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः परुषरोमकचः अनिलात्मा मन्दोऽस्ति । अथ स्नाय्वस्थ्यसृक्शुक्रवसामज्जाः (क्रमात्) मन्दार्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः (भवन्ति) ।

आलस्य युक्त, पिङ्गलनेत्र, दुर्बल और लम्बा शरीर, बड़े २ दाँत, कड़े २ शिरके और शरीर के बाल, वात प्रकृति ये सब गुण शनैश्चर के हैं ।

स्नायु (नख) का स्वामी शनैश्चर, हाड का स्वामी सूर्य, रक्त का स्वामी चन्द्रमा, त्वचा (चमड़ा) का स्वामी बुध, शुक्र (वीर्य) का स्वामी शुक्र, मेदा (चर्बी) का स्वामी बृहस्पति, और मज्जा (हाड के भीतर का गूदा) का स्वामी मङ्गल होता है ॥ ५४ ॥

ग्रहों का वर्ण—

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुः
नात्युच्चाङ्गो रक्तगौरश्च वक्रः ।
दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुर्गौरगात्रः
श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः ॥ ५५ ॥

रक्तश्यामः भास्करः, गौरः, इन्दुः, नात्युच्चाङ्गः रक्त गौरश्च वक्रः, दूर्वाश्यामः ज्ञः, गौरगात्रः गुरुः, श्यामः शुक्रः, कृष्णदेहः भास्करिः (आस्ते) ।

थोड़ी लालिमा लिये श्याम वर्ण सूर्य, गौरवर्ण चन्द्रमा, थोड़ी लाली लिये रक्त वर्ण मङ्गल, दूब के समान श्याम वर्ण बुध, गोरे रङ्ग का बृहस्पति, श्यामवर्ण शुक्र और कृष्णवर्ण शनैश्चर का है ॥ ५५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहों का स्वरूपादिबोधकचक्र—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वर्ण	रक्त श्याम	गौर	रक्त गौर	दूर्वाश्याम	गौर	श्याम	कृष्ण
प्रमाण	ह्रस्व	प्रांशु	ह्रस्व	मध्यम	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
आकृति	चतुरस्र	वृत्ता-कार	बलिष्ठ	कृशमध्य	मांसल	विस्पष्ट पर्वा	कृश
धातुसार	हड्डी	रक्त	मज्जा	चर्म	चर्बी	शुक्र	नस
नेत्र	मधु पिंगल	स्वच्छ	पीला क्रूर	क्रूर	पिंगल	सुन्दर	पीला
केश	स्वल्प	सुन्दर	लोहित	कृष्ण	पिंगल	सितवक्र	स्थूल
भाषण	मध्यम स्वर	मृदु	मध्यम स्वर	द्व्यर्थक मधुर	प्रगल्भ	मृदु	परुष
गुण	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम
प्रकृति	पित्त	कफ वात	सम धातु	समधातु	कफ	कफवात	वात
तत्त्व	०	०	अग्नि	पृथिवी	आकाश	जल	वायु
रस	कटु	लवण	तिक्त	षड्रस	मधुर	खट्टा	कषाय
अवस्था	वृद्ध	मध्य	तरुण	बाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित
स्वभाव	वीरत्व	प्राज्ञ	हिंसक चंचल	हास्यरुचि उदार	श्रेष्ठ बुद्धि	सुखप्रिय	पिशुन आलसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लहसनयोग—

विश्वम्भराभास्करसिंहिकानां
पुत्रा यदा पञ्चमभावसंस्थाः।
बालस्य दक्षेतरकुक्षिमध्ये
कुर्वन्ति नूनं लशुनाख्यचिह्नम् ॥ ५६ ॥

यदा विश्वम्भराभास्करसिंहिकानां पुत्राः पञ्चमभावसंस्थाः (भवन्ति तदा) बालस्य दक्षेतरकुक्षिमध्ये नूनं लशुनाख्यचिन्हं कुर्वन्ति।

यदि भौम, शनि और राहु तीनों ग्रह जन्मलग्न से पञ्चम भाव में पड़े हों तो बालक के बाँयें कोख में लहसन का चिह्न करते हैं॥ ५६॥

व्रण और लक्ष्म योग—

यत्र त्रयः सौम्ययुता ग्रहाः स्यु-
स्तत्र व्रणस्तत्समराशिदेशे।
तद्वद्रिपुस्थो व्रणकृत्खलो वा
सद्दृष्टयुक्तास्तिलक्ष्मकृत्स्यात् ॥ ५७ ॥

यत्र सौम्ययुताः त्रयः ग्रहाः स्युः तत्र तत्समराशिदेशे व्रणः (भवेत्) तद्वत् रिपुस्थः खलः व्रणकृत् वा, सद्दृष्टयुक्तः तिललक्ष्मकृत्स्यात्।

जिस वाम अथवा दक्षिण अंग विभाग राशि में तीन शुभ या तीन अशुभ ग्रहों के साथ बुध स्थित हो बालक के उस अंग में व्रण (घाव) इत्यादि होता है। उन तीनों ग्रहों में जो ग्रह सब से अधिक बलिष्ठ हो उस की दशा अन्तरदशा में व्रण का योग होता है।

जो पापग्रह जन्मलग्न से छठवें स्थान में व्यवस्थित हो वह "मेषः शिरोऽथवदनं वृषभो विधातुः" इत्यादि १९ वें श्लोक की टीका में लिखे श्लोक के अनुसार उस राशि के समान अङ्ग में व्रण (किसी प्रकार का घाव) करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि वही षष्ठ स्थान में स्थित पापग्रह, शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो केवल लक्षण (काले बालों वाला चिह्न) होता है।

(यदि वही छठवें स्थान में व्यवस्थित पापग्रह अपनी राशि, अपने नवमांश या स्थिर संज्ञक (२।५।८।११) राशि में पड़ा हो तो वह चिह्न बालक के जन्म के साथ होता है) ॥ ५७ ॥

कं दृक् श्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रञ्च होरादय-
स्ते कण्ठांशकबाहुपार्श्वहृदये क्रोडानि नाभिस्ततः।
बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जङ्घांघ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥५८॥

(त्रिभिः) द्रेष्काणभागैः होरादयः (क्रमात्) कंदृक्श्रोत्रनसाकपोलहनवः वक्त्रञ्च, ते कण्ठांशकबाहुपार्श्वहृदये क्रोडानि नाभिः (च) ततः बस्तिः शिश्न-गुदे वृषणावूरू जानुनी जङ्घाङ्घ्री इति उभयत्र त्रिधा (अङ्गविभागे ज्ञेयः)। उदितैः वामं (ज्ञेयम्)।

तीनों द्रेष्काणों के क्रमसे तीन प्रकार का अङ्ग विभाग कल्पना करे। यथा लग्न में प्रथम द्रेष्काण का उदय हो तो शिर से लेकर मुख तक बारहो अङ्गों का एक भाग, दूसरे द्रेष्काण का उदय हो तो कण्ठ से लेकर नाभिपर्यन्त बारह अङ्गों का दूसरा विभाग और तीसरे द्रेष्काण का उदय हो तो बस्ति से लेकर चरण तक बारहों अंगों का तीसरा विभाग जाने। अर्थात् लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न को शिर, दूसरे और बारहवें को क्रमसे दाहिना और बायाँ नेत्र, तीसरे और ग्यारहवें भाव को क्रमसे दाहिना और बायाँ कान, चौथे और दशवें भावको क्रमसे नाशिका का दाहिना और बायाँ छिद्र, पाँचवें और नववें स्थान को यथा क्रम दाहिना और बायाँ गाल एवं छठवें और आठवें स्थान को क्रमसे दाहिने और बायें बगल की दाढ़ी और सातवें भाव को मुख जानना चाहिये। ऐसे ही यदि दूसरे द्रेष्काण का उदय हो तो लग्न को कण्ठ, दूसरे और बारहवें भाव को दाहिना और बायाँ कन्धा, तीसरे और ग्यारहवें भाव को दाहिना बायाँ भुज, चौथे और दशवें भाव को दाहिनी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और बाईं बगल, पाँचवें और नववें भाव को क्रमसे हृदय का दाहिना बायाँ भाग, छठवें और आठवें भाव को पेट का दाहिना बायाँ हिस्सा, और सातवें भाव को नाभि कल्पना करे। इसी प्रकार यदि लग्न में तीसरे द्रेष्काण का उदय हो तो जन्मलग्न को बस्ति (पेडू=नाभि और लिङ्ग के बीच का भाग), दूसरे और बारहवें भाव को लिङ्ग और गुदा का क्रमसे दाहिना और बायाँ भाग, तीसरे और एकादश को अण्डकोश का दाहिना और बायाँ भाग, चौथे और दशवें भावको क्रमसे दाहिना और बायाँ ऊरू (पैर की सन्धि), पाँचवें और नववें भाव को दाहिने और बायें पैर की गाँठ एवं छठवें और आठवें भाव को दाहिनी तथा बाईं फिली और सातवें भाव को पैर समझना चाहिये।

इन भागों में दृश्य चक्रार्ध हो तो बायाँ और अदृश्य चक्रार्ध हो तो दाहिना अङ्ग कल्पना करे।

लग्न का उदित अंश, द्वादश, एकादश, दशम, नवम, अष्टम और सातवें भाव का लग्नोदित अंश के तुल्य भाग ये उदित कहलाते हैं। और बाकी अनुदित कहा जाता है ॥ ५८ ॥

इनका प्रयोजन—

तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्
स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्यथाऽऽगन्तुकः।
मन्देऽश्मानिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभवः
सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ शृङ्ग्यब्जजोऽन्यैः शुभम् ५९

तस्मिन् पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्। स्वर्क्षांशस्थिरसंयुते तु सहजः, अन्यथा आगन्तुकः। मन्दे श्मानिलजः, भौमे अग्निशस्त्रविषजः, बुधे भूभवः, सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन, हिमगौ शृङ्ग्यब्जजः अन्यैः शुभम्।

जिस राशि अङ्ग में पापग्रह व्यवस्थित हो (अथवा उसे देखता हो) तो बालक के उस अङ्ग में घाव (फोड़ा फुँसी चोट का घाव इत्यादि) होता है। और जिस राशि अङ्ग को शुभग्रह देखता हो अथवा उसमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयुक्त हो उस अङ्ग में तिल मंसा इत्यादि का चिह्न होता है। जो उक्त ग्रह अपनी राशि या अपने नवमांश अथवा स्थिर (२।५।८।११) राशि या स्थिर राशि के नवमांश में व्यवस्थित हों तो वह चिह्न जन्म से ही पैदा हुआ होता है। उक्त स्थान से अतिरिक्त स्थान में ग्रह स्थित हो तो व्रणादि आगन्तुक (अर्थात् उस ग्रह की दशा, अन्तरदशा इत्यादि में पैदा) होते हैं।

जो लग्न राशि शनैश्चर से युक्त या दृष्ट हो तो पत्थर के लगने या पत्थर पर गिरने या वायु के सम्बन्ध से घाव होता है। यदि मङ्गल से दृष्ट या युक्त हो तो अग्नि से जल जाने से या हथियार की चोट से या विष के प्रयोग से पैदा हुआ घाव होता है। यदि अङ्ग राशि बुध से युक्त या दृष्ट हो तो भूमि सम्बन्ध से घाव होता है। यदि अंग राशि सूर्य से युक्त या दृष्ट हो तो काष्ठ (लकड़ी) के लगने या चार पैर वाले जानवरों पर से गिरने या बैल इत्यादि के मारदेने से घाव होता है। यदि अङ्ग राशि को चन्द्रमा देखता हो या उसपर बैठा हो तो सींग वाले जानवरों के मारने या सींग गड़ जाने से या जलजन्तुओं के द्वारा घाव होता है। अन्य शुभग्रहों से दृष्ट युत होने से घाव नहीं होता। यदि शुभग्रह और पापग्रह दोनों से दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के बल के तारतम्य से घाव इत्यादि का आदेश करना चाहिये ॥ ५९ ॥

षडङ्गुलियोग—

दशमे बुधजीवौ च सूर्यभौमौ च कण्टके।
तृतीयैकादशे पापो बालकः स्यात्षडङ्गुलिः ॥६०॥

दशमे बुधजीवौ च कण्टके सूर्यभौमौ च (स्तः) तृतीयैकादशे पापः (यदि भवेत्तदा) बालकः षडङ्गुलिः स्यात्।

जन्मकालीन लग्न से दशवें स्थानमें बुध और बृहस्पति, कण्टक (१।४।७।१०) में सूर्य और मङ्गल बैठे हों और तीसरें तथा एग्यारहवें स्थान में कोई भी पापग्रह (क्षीणचन्द्रमा या शनि) पड़े हों तो बालक को ६ अंगुली होती है ॥ ६० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रविनाशयोग—

द्वादशे शनिभौमौ वा वामनेत्रं विनश्यति ।
द्वादशे रविराहू च दक्षनेत्रं विनाशयेत् ॥ ६१ ॥

(यदि) द्वादशे शनिभौमौ (स्तस्तदा) वामनेत्रं विनश्यति । (यदि) च द्वादशे रविराहू (स्तस्तदा) दक्षचक्षुर्विनाशयेत् ।

जन्मकुण्डली में यदि बारहवें चन्द्रमा और मङ्गल पड़ें हों तो बायाँ नेत्र खराब होता है । एवं यदि बारहवें स्थान में सूर्य और राहु बैठे हों तो दाहिनी आँख कानी होती है ॥ ६१ ॥

मूकयोग—

सहजस्थो यदा शुक्रः सिंहे मेषे बृहस्पतिः ।
दशमे रविभौमौ च मूको भवति बालकः ॥६२॥

यदा सहजस्थः शुक्रः सिंहे वा मेषे बृहस्पतिः दशमे रविभौमौ (भवतस्तदा) बालकः मूको भवति ।

यदि जन्म कुण्डली में तृतीय स्थान में शुक्र व्यवस्थित हो, सिंह वा मेष राशि का हो कर किसी स्थान में बृहस्पति पड़ा हो और सूर्य तथा मङ्गल दशम स्थान में बैठे हों तो बालक गूँगा होता है ॥ ६२ ॥

किसी भी कुण्डली में युगपत् (एक साथ) तृतीय में शुक्र और दशम में सूर्य नहीं पड़ सकता इसलिये दशम में केवल मंगल हो और शेषस्थिति पूर्ववत् हो तो मूकयोग होता है ।

म्लेच्छयोग—

सिंहलग्ने यदा जातो यामित्रे च शनैश्चरः ।
ब्रह्मपुत्रोऽपि सञ्जातो म्लेच्छो भवति बालकः ॥६३॥

यदा सिंहलग्ने जातः यामित्रे शनैश्चरश्च तदा ब्रह्मपुत्रोपि सञ्जातः बालकः म्लेच्छो भवति ।

यदि सिंह राशि का जन्मलग्न हो और उससे सातवें स्थान में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनैश्चर बैठा हो तो यदि बालक ब्रह्माका भी पुत्र हो तौ भी म्लेच्छ हो जाता है ॥ ६३ ॥

अन्य म्लेच्छयोग—

लग्नस्थो देवमन्त्री च सैंहिकेयो धरात्मजः ।
सितसप्तमसंयोगः अष्टमे यदि भास्करः ॥ ६४ ॥
ब्रह्मपुत्रोपि सञ्जातो वेश्याम्बुधिरतः सदा ।
पञ्चविंशतिवर्षेण म्लेच्छो भवति निश्चितम् ॥६५॥

यदि लग्नस्थः देवमन्त्री सैंहिकेयः धरात्मजश्च सितसप्तमसंयोगः अष्टमे यदि भास्करः तदा ब्रह्मपुत्रोपि जातः सदा वेश्याम्बुधिरतः पञ्चविंशतिवर्षेण निश्चितं म्लेच्छो भवति ।

यदि जन्मलग्न में बृहस्पति, राहु और मङ्गल व्यवस्थित हों, सप्तम स्थान में शुक्र पड़ा हो और अष्टमस्थान में आदित्य बैठा हो तो वह बालक यदि ब्रह्माका पुत्र हो तौ भी अनेक वेश्याओं में सदा आसक्त रहता है और २५ पचीशवें वर्ष में निश्चय म्लेच्छ हो जाता है ॥ ६४-६५ ॥

अन्य राजयोग—

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने यदा भौमो राजा भवति निश्चितम्॥६६॥

यदा लग्ने सौरिः तथा चन्द्रः त्रिकोणे जीवभास्करौ कर्मस्थाने यदा भौमः तदा निश्चितं राजा भवति ।

यदि जन्मलग्न में शनैश्चर।तथा चन्द्रमा त्रिकोण (५।९) स्थान में (अलग २) बृहस्पति और सूर्य और दशवें स्थान में मङ्गल पड़ा हो तो वह बालक अवश्य (अपने कुल में) राजा होता है ॥ ६६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्यराजयोग—

सिंह लग्ने यदा भौमः पञ्चमे च निशाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुः स जातः कुलदीपकः ॥६७॥

यदा सिंहलग्ने भौमः पञ्चमे च निशाकरः यदा व्ययस्थाने राहुः (तदा) स जातः कुलदीपकः (भवेत्) ।

यदि सिंहराशि का जन्मलग्न हो और उसी में मङ्गल बैठा हो, पांचवें स्थान में चन्द्रमा और बारहवें स्थान में राहु बैठा हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक तुल्य अर्थात् अपने कुल में बड़ा प्रतापवान् होता है ॥ ६७ ॥

अन्य राजयोग—

लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे च दिवाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुः विख्यातः स न संशयः ॥६८॥

लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे दिवाकरः व्ययस्थाने यदा राहुः (तदा) स विख्यातः (भवेत इति) संशयः न ।

यदि जन्मकालीन लग्न में वा सप्तम स्थान में मंगल, पञ्चम में सूर्य और बारहवें स्थान में राहु बैठा हो तो वह बालक निःसन्देह बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति होता है ॥ ६८ ॥

राजयोग—

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ ६९ ॥

यस्य मूर्तौ शुक्रबुधौ केन्द्रे चैव बृहस्पतिः यस्य दशमे अङ्गारकः स कुलदीपकः ज्ञेयः ।

जिस बालक की जन्म कुण्डली में जन्मलग्न में शुक्र और बुध, केन्द्र (१।४।७।१०) में बृहस्पति और दशवें स्थान में मङ्गल बैठा हो वह बालक कुलका दीपक अर्थात् बहुत उज्ज्वल चरित होता है ॥ ६९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दरिद्र योग—

लग्ने शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥७०॥

लग्ने शुक्रः वा बुधो नैव केन्द्रे बृहस्पतिः नास्ति दशमे अङ्गारकः नैव स जातः किं करिष्यति ।

जिस बालक की जन्म कुण्डली में लग्न में शुक्र या बुध न पड़ा हो, केन्द्र (१।४।७।१०) में बृहस्पति न बैठा हो, और दशम स्थान में मङ्गल भी व्यवस्थित न हो वह बालक क्या करेगा (अर्थात् वह बालक नालायक होता है) ॥ ७० ॥

अन्य शुभाशुभ योग—

त्रिभिः स्वस्थैः भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिर्नीचैः भवेद्दासस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः ॥७१॥

त्रिभिः स्वस्थैः मन्त्री, त्रिभिरुच्चैः नराधिपः त्रिभिः नीचैः दासः त्रिभिर-स्तंगतैः जडः भवेत् ।

जिस बालक की कुण्डली में तीन ग्रह अपनी अपनी राशि में पड़े हों वह बालक राजमन्त्री होता है। जिसकी जन्म कुण्डली में तीन ग्रह अपनी २ उच्चराशि में व्यवस्थित हों वह बालक राजा होता है। जिसकी कुण्डली में तीन ग्रह अपनी २ नीच राशि के पड़े हो वह बालक दास (दूसरों की सेवा करने वाला) होता है एवं जिस कुण्डली में ३ ग्रह अस्तंगत हों वह बालक जड (महा मूर्ख) होता है ॥ ७१ ॥

पितृधनप्राप्तियोग—

लग्ने शुक्रस्तथा चन्द्रः सहजस्थो यदा गुरुः ।
पित्रा ह्युपार्जितैर्द्रव्यैः स भवेन्निश्चितं सुखी ॥७२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा लग्ने शुक्रः तथा चन्द्रः सहजस्थः गुरुः तदा हि पित्रा उपार्जितैः द्रव्यैः निश्चितं सुखी स्यात् ।

यदि जन्मलग्न में शुक्र और चन्द्रमा पड़े हो और तीसरे स्थान में बृहस्पति बैठा हो तो वह बालक अपने बाप की कमाई सम्पत्ति से निःसन्देह सुखी होता है ॥ ७२ ॥

(१) अरिष्ट योग—

सुतमदननवान्त्यरन्ध्रलग्ने-
ष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ।
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यै-
र्यदि बलिभिर्न विलोकितो युतो वा ॥७३॥

अशुभयुतः शीतरश्मिः सुतमदननवान्त्यरन्ध्रलग्नेषु (स्थितः) बलिभिः भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैः यदि विलोकितः वा युतः न तदा मरणाय भवति ।

यदि क्षीण चन्द्रमा पापग्रह से युक्त होकर पाचवें, सातवें, नववें, बारहवें, आठवें अथवा लग्न में बैठा हो और बलवान् शुक्र, बुध या बृहस्पति से न देखा जाता हो या उनसे युक्त न हो तो ऐसे योग में पैदा हुए सन्तान की मृत्यु होती है ॥ ७३ ॥

अरिष्टभङ्ग—

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ।
षष्ठाष्टमे भवेच्चन्द्रः सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥७४॥

यदा कृष्णपक्षे दिवा शुक्लपक्षे निशि जन्म षष्ठाष्टमे चन्द्रः भवेत्तदा सर्वारिष्टं निवारयेत् ।

यदि बालक का जन्म कृष्णपक्ष में दिन में शुक्लपक्ष में रात्रि में हो और छठवें या आठवें स्थान में चन्द्रमा पड़ा हो तो सब अरिष्टों को दूर करता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात् पूर्व श्लोक के अनुसार छठवें आठवें स्थान का चन्द्रमा अरिष्टकर होता है किन्तु यदि कृष्णपक्ष में दिन में, शुक्लपक्ष में रात्रिमें जन्म हो तो चन्द्रमा अरिष्टकर नहीं होता ॥ ७४ ॥

(२) अरिष्ट योग—

चन्द्रोऽष्टमे भूमिसुतश्च सप्तमे
धर्मे तमो जन्मनि सूर्यनन्दनः ।
अर्कः सुते देवगुरुस्तृतीयगः
षष्ठे भृगुर्ज्ञोऽम्बुगतश्च मृत्युदः ॥ ७५ ॥

अष्टमे चन्द्रः सप्तमे भूमिसुतः धर्मे तमः जन्मनि सूर्यनन्दनः सुते अर्कः तृतीयगः देवगुरुः षष्ठे भृगुः अम्बुगः ज्ञः च मृत्युदः (भवति) ।

जन्मलग्न से आठवें स्थान में चन्द्रमा, सप्तम स्थान में भौम, नवम में राहु, जन्मलग्न में शनैश्चर, पञ्चम स्थान में सूर्य, तृतीयस्थानमें बृहस्पति, षष्ठ स्थान में शुक्र और चतुर्थ स्थान में बुध बैठा हो तो मृत्युदायक होता है ॥ ७५ ॥

(३) अरिष्ट योग—

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्या त्वपमृत्युना ॥७६॥

यदा जन्मलग्ने राहुः षष्ठे चन्द्रमा भवति (तदा) जातः मृत्युं अवाप्नोति । कुदृष्ट्या तु अपमृत्युना (मृत्युमवाप्नोति) ।

जिस बालक के जन्मसमय में लग्न में राहु और छठवें स्थान में चन्द्रमा बैठा हो वह बालक मृत्यु पाता है। यदि उस पर पापग्रह (सूर्य, भौम, शनि) की दृष्टि हो तो अपमृत्यु (जल में डूबने, आग में जलने, साँप से काटने, हिंसक जीवों द्वारा मारे जाने, विष भक्षण करने या इसी प्रकार के और किसी कारण) से उसका विनाश होता है ॥ ७६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) अरिष्ट योग—

शनिक्षेत्रे यदा भानुः भानुक्षेत्रे यदा शनिः।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवेन रक्षितो यदि ॥ ७७ ॥

यदि शनिक्षेत्रे भानुः भानुक्षेत्रे शनिः तदा यदि देवेन रक्षितः (तदापि) द्वादशे वर्षे मृत्युः भवेत् ।

यदि शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में सूर्य पड़ा हो सूर्य की राशि (सिंह) में शनैश्वर बैठा हो तो देवताओं से रक्षित बालक भी बारहवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ७७ ॥

(५) सद्योरिष्टयोग—

पातालस्थो यदा राहुश्चन्द्रः षष्ठाष्टमेऽपि च ।
पापदृष्टो विशेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ ७८ ॥

यदा पातालस्थो राहुः षष्ठाष्टमे च अपि चन्द्रः विशेषेण पापदृष्टः तदा शिशोः सद्यः पापहरः (भवति) ।

यदि जन्मलग्न से चतुर्थभाव में राहु और छठवें अथवा आठवें स्थान में चन्द्रमा बैठा हो एवं पापग्रह से विशेषरूप (पूर्णदृष्टि) से देखा जाता हो तो बालक का प्राण सद्यः (तुरत) हरण करने वाला होता है ॥ ७८ ॥

(६) अरिष्ट योग—

षष्ठाष्टमे तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ ७९ ॥

यदा जन्मकाले षष्ठाष्टमे तथा मूर्तौ बुधः तदा यदि शङ्करः रक्षति (तथापि) चतुर्थवर्षे मृत्युः स्यात् ।

यदि जन्मसमय में छठवें, आठवें, और लग्न में बुध बैठा हो तो साक्षात् शंकर के रक्षक होने पर भी वह बालक चौथे वर्ष मर जाताहै ७९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(७) अरिष्ट योग—

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टसु च चन्द्रमाः ।
वर्षेऽष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षको यदि ॥ ८० ॥

यदा भौमक्षेत्रे जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः तदा यदि ईश्वरः रक्षकः (तथापि) अष्टमे वर्षे वै मृत्युः स्यात् ।

यदि मङ्गल की राशि में बृहस्पति बैठा हो और छठवें या आठवें स्थान में चन्द्रमा व्यवस्थित हो तो ईश्वर से रक्षित होने पर भी आठवें वर्ष में बालक की मृत्यु अवश्य हो जाती है ॥ ८० ॥

(८) अरिष्ट योग—

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ ८१ ॥

यदा जन्मलग्ने भौमः अष्टमे बृहस्पतिः च तदा यदि शङ्करः रक्षति (तदाऽपि) द्वादशे वर्षे मृत्युः (स्यात) ।

यदि जन्म कालीन लग्न में मङ्गल और आठवें स्थान में बृहस्पति बैठे हों तो शंकर के रक्षक होते हुए भी बालक बारहवें वर्ष में काल के गाल में जाता है ॥ ८० ॥

(९) अरिष्ट योग—

दशमेऽपि यदा राहुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ ८२ ॥

यदा जन्मकाले दशमे राहुः भवेत्तदा नरस्य षोडशे वर्षे मृत्युर्ज्ञेयः ।

जिस बालक के जन्म समय में दशम स्थान में राहु पड़ा हो उस की सोलहवें साल में मृत्यु होती है ऐसा पण्डितों को समझना चाहिये ॥ ८२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भ्रातृहा योग—

अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठजातं शनैश्चरः ।
जातं जातं कुजो हन्ति सहजस्थो भवेद्यदि ॥८३॥

रविः अग्रजातं हन्ति, शनैश्चरः पृष्ठजातं, कुजः जातं जातं हन्ति यदि सहजस्थः भवेत् ।

जन्म कालिक कुण्डली में सूर्य तृतीय भाव में पड़ा हो तो बड़े भाई का, शनैश्चर तृतीय भाव में बैठा हो तो छोटे भाई का एवं भौम तृतीय भाव में व्यवस्थित हो तो सब भाइयों का नाश करता है ॥ ८३ ॥

(१) पितृहा योग—

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रगतो भवेत् ।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥८४॥

यदा दशमस्थो भौमः शत्रुक्षेत्रगतो भवेत् (तदा) तस्य बालस्य पिता शीघ्रं म्रियते (इति) संशयः न ।

यदि मंगल अपने शत्रु (बुध) की राशि (३।६) का होकर दशम स्थान में बैठा हो (अर्थात् धनु या मीन राशि लग्न में हो) और उससे दशम में मिथुन अथवा कन्या राशि का होकर मंगल पड़ा हो, तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाता है इस में सन्देह नहीं ॥ ८४ ॥

(२) अन्य योग—

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥८५॥

यदा लग्नस्थाने सौरिः षष्ठे चन्द्रमाः सप्तमस्थाने तु कुजः भवति तदा तस्य पिता न जीवति ।

यदि जन्मलग्न में शनैश्चर, छठवें स्थान में चन्द्रमा और सातवें स्थान में मङ्गल पड़ा हो तो उस बालक का पिता नहीं जीता अर्थात् काल के गाल का ग्रास होता है ॥ ८५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) अन्य योग—

लग्ने जीवो धने मन्दो रविर्भौमस्तथा बुधः ।
विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता ॥ ८६ ॥

(यदि) लग्ने जीवः धने मन्दः रविः भौमः तथा बुधः (तिष्ठति तदा) विवाह समये तस्य बालस्य पिता म्रियते ।

यदि जन्मलग्न में बृहस्पति, द्वितीय भाव में शनैश्चर, सूर्य, मंगल और बुध बैठे हों तो उस बालक के विवाह के समय उसका पिता मर जाता है ॥ ८६ ॥

मातृ पितृ विनाश योग—

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ८७ ॥

यदा षष्ठे द्वादशे च स्थाने पापग्रहो भवेत् तदा मातृभयं विद्यात् । चतुर्थे दशमे गृहे (पापे स्थिते) पितुः (भयं विद्यात्) ।

यदि जन्मकालीन लग्न से छठवें और बारहवें स्थान में पापग्रह बैठा हो तो माता को भय (मृत्यु भय) होता है । एवं चौथे तथा दशवें स्थान में पाप ग्रह बैठे हों तो पिता को मृत्युभय होता है ॥ ८७ ॥

भावकारकविचार—

इनाङ्कक्षात्तातः शशिसुतगृहान्मातृकथितः
कुजाद्भ्रातृस्थानात्सहज इनपुत्राष्टमगृहात् ।
मृतिर्ज्ञात्षष्ठाख्याद्रुज इति क्रमान्मातुलमपि
गुरोःपुत्रात्पुत्रं सितमदनभाद्दारजफलम्॥८८॥

इनाङ्कक्षात् तातः शशिसुतगृहात् मातृकथितः कुजात् भ्रातृस्थानात् सहजः इनपुत्राष्टमगृहात् मृतिः ज्ञात् षष्ठाख्यात् रुज इति मातुलमपि भृगोः पुत्रात् पुत्रं सितमदनभात् दारजफलं (बोध्यम्) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य जहाँ पड़ा हो उससे नववें स्थान से पिता का, चन्द्रमा जहाँ बैठा हो उससे चौथे स्थान से माता का एवं भौम के तृतीय से भाई का, शनि के अष्टमस्थान से मृत्यु का, बुध के छठवें भाव से रोग और मामा का, बृहस्पति के पञ्चम से पुत्र का और शुक्र के सातवें से स्त्री का शुभाशुभत्व देखना चाहिये ॥ ८८ ॥

शुभाशुभ विचार की विधि—

यद्भावनाथो रिपुरन्ध्ररिष्फे
दुःस्थानपो यद्भवनास्थितो वा ।
तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः
शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यम् ॥ ८९ ॥

यद्भावनाथः रिपुरन्ध्ररिष्फे (स्थितः) वा दुःस्थानपः यद्भवनस्थितः तद्भावनाशं तज्ज्ञा कथयन्ति । शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यं (भवेत्) ।

जिस भाव का स्वामी छठवें, आठवें, बारहवें स्थान में बैठा हो अथवा छठवें, आठवें या बारहवें स्थान का स्वामी जिस भाव में पड़ा हो उस भाव की हानि होती है ऐसा फलित शास्त्र के जानकारों ने कहा है। एवं यदि वह भाव शुभग्रहों से देखा जाता हो तो उस भाव सम्बन्धी सुख की वृद्धि होती है ॥ ८९ ॥

और भी—

यो यो भावः स्वामिसौम्यैर्युतो वा
दृष्टो वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानि-
र्निर्देष्टव्या पृच्छतो जन्मतो वा ॥ ९० ॥

यो यो भावः स्वामिसौम्यैः युतः वा दृष्टः स्यात् तस्य तस्य वृद्धिः अस्ति । एवं पापैः (दृष्टः वा युतः तदा) तस्य भावस्य हानिः पृच्छतः वा जन्मतः निर्देष्टव्या ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो जो भाव अपने २ स्वामियों और शुभग्रहों (बुध, गुरु, शुक्र) से युत हों अथवा देखे जाते हों उस उस भाव की वृद्धि (बढ़ती) होती है। इसी भाँति जो भाव पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो उस भाव की हानि होती है। इस का विचार प्रश्नकाल में अथवा जन्मकाल में करना चाहिये ॥ ९० ॥

राशियों की शीर्षोदयादिसंज्ञा—

गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः
पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव ।
शीर्षोदया दिनबलाश्च भवन्ति शेषा
लग्नं समेत्युभयतः पृथुरोमयुग्मम् ॥ ९१ ॥

गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्या त एव विमिथुना पृष्ठोदया कथिताः। शेषाः शीर्षोदया दिनबलाश्च भवन्ति । पृथुरोमयुग्मं उभयतः लग्नं समेति ।

वृष, मेष, धनु, कर्कि, मिथुन और मकर ये राशियाँ रात्रि में बलवती होती है और मिथुन को छोड़ कर वेही राशियाँ पृष्ठोदय भी कही गई हैं। शेष (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ) राशियां शीर्षोदय संज्ञक और मिथुन को छोड़ दिन में बलिष्ठ होती है। मीन राशि उभयोदय संज्ञक और दिनरात्रि दोनों में बलिष्ठ होती है ॥ ९१ ॥

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा
झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशै-
स्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेस्तनीचाः ॥ ९२ ॥

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैः त्रिनवकविंशतिभिश्च दिवाकरादितुङ्गाः तेऽस्त नीचाः (च भवन्ति)।

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन और तुला इन राशियों के १०। ३।२८।१५।५।२७।२० इन अंशों पर सूर्यादिक ग्रहोंका उच्च होता है। उससे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सातवीं राशि के उतने ही अंशो पर सूर्यादिकोंका परम (१)नीच होताहै। स्फुटता के लिए चक्र देखिये ॥ ९२ ॥

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०
नीच	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	१ २०

इति आजमगढमण्डलान्तर्गतब्रह्मपुराभिजनसरयूपारीणपण्डित श्रीधर्मदत्तद्विवेदितनुजन्मना ज्यौतिषाचार्यश्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदिना त्र्यङ्कग्रहशशांक १९९३ मितविक्रमवत्सरे संकलितो लग्नरत्नाकरः समाप्तः।

(१) आज कल कुछ लोग अपनी कपोल कल्पना के अनुसार उच्च नीच मानने लगे हैं किन्तु वह जातकशास्त्र के विरुद्ध अर्थात् अनार्ष होने के कारण हेय है।

प्राप्तिस्थानम्—

चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय

बनारस सिटी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.

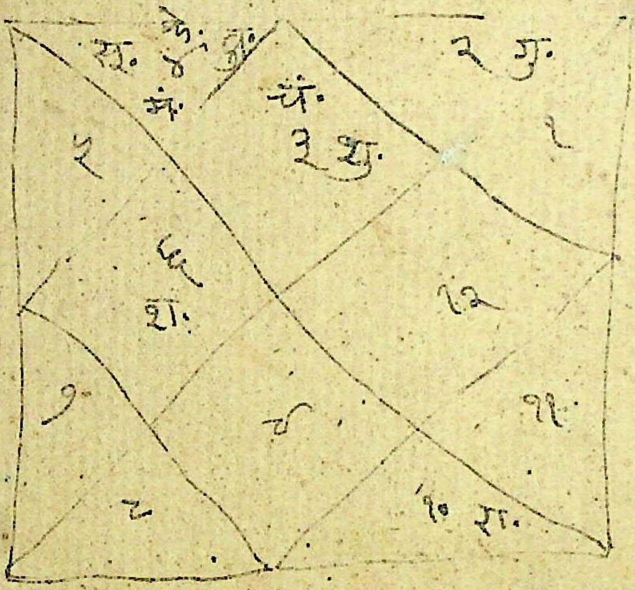

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh